भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

SAHARA INSTITUTE OF COMPUTER EDUCATION

HINDI & ENGLISH

Mob: -+91 9415995241

Director: Kamlesh Gaur

DOAP, ADCA, DCA, DFA, TALLY

INTERNET

इंटरनेट बहुत सारे Networks का ऐसा जाल है जो पूरे World के Computers को एक दूसरे से जोड़ता है और दुनियाभर के कंप्यूटर में नेटवर्क का आदान प्रदान करता है । इंटरनेट की खोज बॉब कहन और विन्ट सर्फ़ ने सन 1969 में किया था ।

Internet का फुल फॉर्म Inter-Networking होता है और इसे हिन्दी में "अंतरजाल" कहा जाता है जिसका मतलब Networks का ऐसा जाल होता है जिससे बहुत सारे Computers को आपस में जोड़ा जा सके ।

इंटरनेट आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत बन गयी है। आज हम लगभग बहुत तरह के कामो को करने के लिए Internet पर निर्भर हो गए है।

जैसा कि मान लेते है आपको किसी तरह की जानकारी चाहिए तो

यदि आप उसको Books की मदद से ढूंढते है तो इसमे बहुत परेशानी होगी तथा इसके लिए सही Book को भी ढूंढना होगा, जिसमे Time भी ज्यादा Waste होगा।

लेकिन वही जानकारी यदि आप इंटरनेट पर ढूंढते है तो आपको तुरंत उससे Related जानकारी मिल जाएगी जिसमे आपका समय भी कम Waste होता है।

हमारे ही देश मे आज के समय मे इंटरनेट का इस्तेमाल और Data Consume करने वालो की संख्या काफी बढ़ गयी है।

वही अगर हम पिछले पाँच सालो के पहले का Data देखें तो पहले बहुत ही कम लोग Internet का उपयोग करते थे।

आज के समय मे आप What 'Sapp की मदद से किसी अपने के साथ दूर देश में बैठे व्यक्ति से आप आसानी से Video Call पर बात कर सकते है जो कि संभव इंटरनेट की वजह से ही हो पाया है

Internet का हिन्दी अर्थ – Internet Meaning in Hindi

दोस्तों, अगर आप सोचते होंगे कि What is internet called in Hindi क्योंकि Internet तो एक अंग्रेजी शब्द है जिसका अंग्रेजी मतलब Inter Connected Network होता है लेकिन Internet को हिन्दी में "अंतरजाल" कहा जाता है जिसका मतलब नेटवर्क का ऐसा जाल होता है जो दुनियाभर के कंप्यूटर को आपस में जोड़ता है।

वास्तव में इंटरनेट बहुत सारे नेटवर्क का जाल ही तो है जिसने पुरे विश्व को एक साथ बांधकर रखा है और पुरे दुनिया के लोगों को आपस में एक घर परिवार के जैसे जोड़कर दिया है क्योंकि आप इसके मदद से जिससे चाहो उससे बात कर सकते हो चाहे आप दुनिया के किसी भी कोने में हो।

भारत में इंटरनेट 1989 में ही आ गया था है लेकिन अभी भी इंडिया के लोग Internet का इस्तेमाल बहुत ही कम मात्रा में करतें हैं और Google पर भी लोग हिन्दी में बहुत ही कम **Search** करतें हैं और अभी भी लोग Google पर Search करते समय **अंग्रेजी** शब्द का उपयोग करतें हैं।

इंटरनेट का फुल फॉर्म

इंटरनेट का फुल फॉर्म "Inter Connected Network" होता है।

यह Network का वह विशाल जाल है जिसके साथ दुनिया के लगभग सभी प्रकार के Data Servers या यू कहे कि Data Base जुड़े है।

इंटरनेट के जरिए हमारे Government Data Base, School और Colleges के Data Base यहाँ तक कि आपके Mobile और Computer भी जुड़े हुए है

इंटरनेट कितने प्रकार के होते है ?

1. Intranet

Intranet भी इंटरनेट की तरह की एक नेटवर्क होता है जो कि Private होता है –

जिसका उपयोग Companies अपने Office के Computers को Secure तरीके से Connect करने के लिए करती है जिसको बिना User Name और Password के इस्तेमाल नही किया जा सकता है।

इसमे भी TCP और IP Technology का उपयोग करके डेटा को Private तौर पर शेयर किया जाता है और

यह एक Computers का जाल होता है जो कि Private Network के रूप में मौजूद होता है और इसको कोई भी बाहरी व्यक्ति इस्तेमाल नही कर सकता।

2. Extranet

Public Internet से Intranet में जाने की प्रक्रिया को Extranet कहते है।

यह भी एक प्रकार का प्राइवेट नेटवर्क ही है जो कि पब्लिक इंटरनेट की मदद से एक ब्रांच को दूसरे ब्रांच से Connect होता है और डेटा को आपस मे शेयर करने की भी अनुमति देता है।

इसको इस्तेमाल करने के लिए भी User Id और Password की जरूरत पड़ती है तथा इसकी Security पूरी तरह से Internet Firewall और Internet पर **निर्भर** करती है।

इंटरनेट के लाभ / उपयोगिता

1. शिक्षा के क्षेत्र में

अगर हम इंटरनेट का महत्व शिक्षा के क्षेत्र में देखे तो आज बहुत बढ़ गया है। आज Schools **Online Classes** शुरू करने लगी है और **बच्चे भी** Online पढ़ाई करने लगे हैं।

ऑनलाइन पढ़ाई में सबसे बड़ा **फायदा** यह होता है कि बच्चे कभी भी पढ़ सकते है और इसके द्वारा उनको समझ भी जल्दी आता है क्योंकि –

2. बैंकिंग के क्षेत्र में

आज के समय मे आप देखते होंगे कि Online Transactions को कितना महत्व दिया जा रहा है। आज सभी प्रकार की बड़ी **Banking Related Transactions Online** ही होती है।

क्योंकि Online Transactions में उन पर नज़र रखना आसान होता है और **यदि किसी प्रकार की गड़बड़ी हो जाए तो**

उसे पकड़ना भी आसान हो जाता है। यहाँ तक कि Government भी सभी को Online Transactions करने की ही **सलाह** देती है **ताकि**

3. नौकरी के क्षेत्र में

आज आप नौकरी को भी Online Search कर सकते है यदि आप किसी Private या सरकारी क्षेत्र में काम करना चाहते है तो

आपको उनके पास जाकर पूछने की जरूरत नही है बल्कि आप **Online Job Requiting Websites** की मदद से Online Job Search कर सकते है।

4. ग्रामीण क्षेत्रो में

ग्रामीण क्षेत्रो को भी दुनिया के साथ जोड़ने के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल किया जा रहा है।

आज के समय मे गांव में भी लोग जागरूक हो रहे है और **Online Payment** माध्यमों का इस्तेमाल कर रहे है।

Communication के क्षेत्र में

Internet ने Communication को बिल्कुल ही बदल कर रख दिया है।

पहले के समय में देखा जाए तो Commutation का रास्ता केवल लैटर हुआ करता था। जो कि एक पक्ष से दूसरे पक्ष तक पहुचने में काफी समय लग जाया करता था।

और यदि कोई जरूरी खबर हो तो वह भी सही समय पर नही पहुँच पाता था लेकिन

8. राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में

Internet का इस्तेमाल केवल banking या फिर business में ही नही बल्कि **राष्ट्रीय सुरक्षा** में भी किया जा रहा है।

आज के समय मे सभी प्रकार की चीज़ें Internet के माध्यम से ही कंट्रोल की जाती है।

जैसे कि अगर आप **Satellite** को देखे तो उनको कंट्रोल करने के लिए भी Internet की ही मदद ली जाती है।

जहाँ Wireless तरीके से Data को भेजा जाता है।

इंटरनेट की हानि

इंटरनेट के अगर कुछ फायदे है तो इसके **नुकसान** भी बहुत है तो चलिए इसके कुछ नुकसान के बारे में जान लेते है –

1. इंटरनेट के द्वारा बहुत से बच्चे गलत चीज़ों को **जाने अनजाने** में कर बैठते है जैसे कि

कई बार वो लोग गलत वेबसाइट पर पहुँच कर ऐसी Information शेयर कर देते है जिससे कि उनको **Financial नुकसान** भी उठाना पर सकता है।

2. इंटरनेट के द्वारा अश्लीलता को भी बड़ी ही आसानी से फैलाया जा सकता है। जिससे कि लोगो को बहुत नुकसान भी होता है और खाश कर यदि ये चीज़े छोटे बच्चों के नज़र में आ जाए तो इससे उनके **मानसिकता** पर भी काफी गलत प्रभाव पड़ता है।

3. इंटरनेट की मदद से Negativity बहुत तेज़ी से और कम समय मे फैलाई जा सकती है और

आज के समय मे ऐसा हो भी रहा है जिसके कारण **सरकार** ने इसको रोकने के लिए कई कड़े कदम भी उठाए है। ताकि लोगो को Negativity और Negativity फैलाने वाले लोगो से **बचाया** जा सके।

4. इंटरनेट के द्वारा लोगो से **ठगी** भी आसानी से किया जाने लगा है जिसके शिकार आज के समय मे बहुत से लोग हो भी रहे है।

जैसे कि उनको **झूठे विज्ञापन** दिखा कर उनसे पैसा ले लिया जाता है और बाद में उनको कुछ भी उसके बदले नही दिया जाता है।

5. इंटरनेट के द्वारा लोगो की जानकारी को भी चुराया जाता है। जैसे के आज के समय मे **Google** और **Facebook** जैसे Companies अपने Users का डेटा लेकर उसका इस्तेमाल खुद के फायदे के लिए करती है।

6. इंटरनेट के जरिए **Illegal Activities** को भी आसानी से किया जाता है।

7. इंटरनेट के जरिए कुछ लोग हैकिंग जैसे कामों को भी अंजाम देते है। जैसे कि अभी पिछले ही साल एक कंप्यूटर वायरस ने सभी को बहुत परेशान किया हुआ था।

इंटरनेट की विशेषताएँ

1. यह एक ऐसी प्रणाली या यूं कहें कि टेक्नोलॉजी है जो कि पूरी **दुनिया** के Computers और Mobiles को एक दूसरे से जोड़ती है।

2. इंटरनेट **World Wide Web** का एक हिस्सा है जो कि HTML Document को Support करता है और Web Browser की मदद से इसको Access किया जाता है।

3. इंटरनेट का इस्तेमाल अधिकतर Companies और लोग **Email** करने के लिए करते है। जिसके द्वारा World में किसी को भी Message Send या Receive किया जा सकता है।

4. इन्टरनेट में Telnet एक ऐसी Service होती है जिसके द्वारा हम दूसरे कंप्यूटर के Contents को Access करने की **Permission** देता है।

5. इन्टरनेट में File Transfer Protocol का इस्तेमाल Files को दूसरे कंप्यूटर में Copy करने के लिए किया जाता है।

इसका इस्तेमाल Web Development Companies और IT Companies के द्वारा किया जाता है। अपने Servers के Data को Access और Copy करने के लिए।

6. इंटरनेट Relay Chat ऐसी Service है जिसके द्वारा आप दूसरे के साथ **Real Time** में Communicate कर सकते है।

इंटरनेट की सेवाएं

इंटरनेट की सेवाएं प्राप्त करने के लिए आपको सबसे पहले किसी भी इंटरनेट **प्रोवाइडर** से इंटरनेट कनेक्शन प्राप्त करना होगा।

जिसके लिए आप किसी भी प्रोवाइडर से Contact कर सकते है।

आज भारत मे यदि आप Mobile Data Service लेना चाहते है तो आप इन मे से कोई भी **Operator** को चुन सकते है।

1. **Jio-** Jio के Internet Plans काफी अच्छे और **सस्ते** भी है और इसमे आपको jio का Subscription भी साथ मे मिलता है। Jio का सबसे Popular Data और Voice Call Plan 599₹ का है।

2. **Airtel-** Airtel में भी आपको 4G Internet और 2G Internet Network का Support मिलता है और आप को इसमे भी recharge के साथ Xstrem और Live TV Free में देखने को मिलता है।
3. **Bsnl-** Bsnl फिलहाल अधिकतर जगहों ओर **3G Internet सेवाएं** ही प्रदान कर रहा है और इसके Plans भी काफी किफायती है।

इंटरनेट कैसे और कब बना – यह चीज़ पैदा कैसे हुआ ?

इंटरनेट को सबसे पहले 1969 में ASPANET ने Computers को आपस मे जोड़कर Communicate करने वाली Technology को Introduce किया था

और इसके बाद 1980 के समय तक TCP और IP की खोज कर ली गयी और बाद में इन दोनों को आपस मे जोड़ने का काम शुरू किया गया।

असल मे इसकी जरूरत **Cold war** के समय महसूस हुई ताकि जब सभी प्रकार के मौजूद साधन बंद हो जाए तो इसके जरिए अपने लोगो से संचार स्थापित किया जा सके।

भारत मे सबसे पहले इंटरनेट कब शुरू हुआ ?

भारत मे इंटरनेट सबसे पहले **14 अगस्त 1995** में लांच किया गया और इसका पहला इस्तेमाल 15 अगस्त 1995 में किया गया था।

उस वक़्त विदेश संचार निगम लिमिटेड (**VSNL**) ने सबसे पहले इंटरनेट की सेवा प्रदान की थी।

इसके बाद इंटरनेट को सबसे पहले बड़े बड़े शहरों तक पहुँचाया गया और **1996** में Rediff Mail जैसी वेबसाइट की शुरुआत हुई जिसके द्वारा आप अपनी खुद की Email Id Free में बना सकते थे।

इसके बाद धीरे धीरे भारत मे इंटरनेट का विस्तार होता गया और सन **2000** में Technology Act को संसद में पास किया गया और –

इसे लागू कर दिया गया। इसके बाद Yahoo India और Msn जैसे वेबसाइट भी साल 2000 के समय मे **India** में लांच हुए।

इंटरनेट कैसे काम करता है ?

Computers इंटरनेट के जरिए छोटे छोटे Connections के माध्यम से आपस मे Connected रहते है और यह Networks Gateway के द्वारा Main Internet Networks से **Connected** रहते है।

तो ये सभी **Computers, Internet Protocol और Transmission Control Protocol** के जरिये आपस मे Communicate करते है और जब आप कोई File या Document किसी अन्य को भेजते है ।

तो Internet Protocol की मदद से आपका कंप्यूटर दूसरे कंप्यूटर के साथ Communicate करता है और फिर **TCP** की मदद से डेटा को छोटे छोटे हिस्सो में करके भेजता है।

*इसके साथ साथ उस डेटा में destination का IP address भी मौजूद होता है जो कि प्रत्येक कंप्यूटर और नेटवर्क का **अलग अलग** होता है।*

इस पूरे Process में TCP और IP का बहुत अहम रोल होता है।

TCP का काम डेटा को छोटे छोटे Packets में **बांटना** और उसे फिर से Original Form में लाना होता है।

वही IP का काम यह होता है कि डेटा को जिस Address पर भेजा जा रहा है उसे ढूंढना और Message को उस **Address** तक पहुँचाना।

इंटरनेट कैसे और कौन प्रदान करता है ?

अगर हम इंटरनेट के प्रदान करने की बात करे तो यह बहुत ही **पेचीदा मामला** है –

किसी को नही पता है कि इंटरनेट को कौन Control है, लेकिन इंटरनेट को सभी देशों के सरकारों के द्वारा ही संचालित और Control किया जाता है।

लेकिन इंटरनेट को मोहैया करवाने के पीछे बड़े बड़े Tech Companies का हाथ है जो कि उनके डेटाबेस से **जुड़ा** होता है।

जैसे कि आज के समय मे Google के पास सबसे ज्यादा डेटा मौजूद है और वह डेटा इंटरनेट के जरिए सभी देशों तक पहुँचाया जाता है।

ऐसे तो देखा जाए तो इंटरनेट बिल्कुल फ्री है, लेकिन इसके उपकरण बहुत महँगे और Maintenance फीस भी बहुत ज्यादा होती है इसीलिए जब भी कोई व्यक्ति इंटरनेट को अपने ऑपरेटर के द्वारा खरीदता है तो उसको उसका पैसा देना पड़ता है।

इंटरनेट को कैसे बनाया जाता है ?

1. इंटरनेट को बनाने के लिए सबसे पहले Database Servers को स्थापित किया जाता है। इसके बाद उन Database Computers को **IP** और **TCP Technology** के द्वारा **Fiber Cable** की मदद से जोड़ दिया जाता है।
2. फिर उन **Cables** के जरिए दुनिया के अन्य बड़े Database को जोड़ा जाता है। इस तरह एक **Internet** का जाल तैयार हो जाता है। जो दुनिया भर के Database के साथ जुड़ा होता है।
3. और उसके बाद वह Data Base आपके **router** के जरिए आपके Computer के साथ Wire या फिर Wireless माध्यम से जुड़ा होता है जिसे आप बड़ी आसानी से **इंटरनेट** चला पाते हैं।

इंटरनेट के घटक

इंटरनेट के कुछ जरूरी घटक के बारे में जान लेते है।

1. **DSL Modem-** DSL Modems का इस्तेमाल डिजिटल Signals को Analog Signals में बदलता है। जो कि **Telephone line** पर डेटा को भेजने के लिए सही होता है। यह आमतौर पर Internet और Broadband Routers में पहले से ही **मौजूद** होता है। या यूं कहें कि इसको बनाया ही ऐसा जाता है की यह दोनों का काम करे।
2. **DSL Broadband Filter-** इसका उपयोग टेलीफोन Signals से DSL Signal को अलग करने के लिए किया जाता है। ताकि आप इंटरनेट और टेलीफोन का उपयोग अलग अलग कर सके और यह दोनों Signals आपस मे मिक्स न हो जाए।
3. **Firewall और NAT Router-** NAT Routers का इस्तेमाल छोटे नेटवर्क के लिए Firewall के रूप में किया जाता है। ताकि इंटरनेट के जरिए आपके कंप्यूटर में कोई व्यक्ति **घुस न सके।**
4. **Computer Firewalls-** यह Firewalls Computer में ही मौजूद होते है जो कि Computer Routers से कम Secure होते है।
5. **Internet Connection Sharing-** इसके द्वारा इंटरनेट को आपके Home या Office Area में Internet को **शेयर** किया जाता है।

क्या हम भी Internet बना सकते है ?

जी हाँ आज के समय मे कोई भी व्यक्ति खुद का **Internet** बना सकता है। यदि उस व्यक्ति को इसके बारे में जानकारी हो तो,

यहाँ तक कि बहुत सी Companies ऐसी होती है जो कि अपने Office के काम को तेजी से और Secure तरीके से करने के लिए खुद का ही Internet बना लेते है

ताकि Files को तेजी से Send या Receive किया जाए और Security से Related खतरा भी कम रहे, तथा काम और भी तेजी से हो सके।

Companies अपने खुद के Servers से अपने सभी Office के Computers को एक दूसरे के साथ Wire या Wireless Device या LAN से **जोड़** देते है |

जिससे कि उनके यहाँ मौजूद सभी Computers एक दूसरे से Connect हो कर एक Private Internet का **निर्माण** कर देते है।

और डेटा को Company के Private Server में Store किया जाता है और उसी Server के द्वारा Data Transfer भी किया जाता है। जिससे कि उनका खुद का एक छोटा सा **Internet** तैयार हो जाता है।

इंटरनेट के लिए आवश्यक उपकरण

आज के समय मे जैसे इंटरनेट एक सबसे बड़ी जरूरत बन गया है इसीलिए जब भी आप कोई मोबाइल और कंप्यूटर Device **खरीदते** है तो यह सुनिश्चित करना बहुत जरूरी होता है कि उसमे इंटरनेट चलेगा या नही।

इंटरनेट को इस्तेमाल करने के लिए कुछ जरूरी उपकरण आपके कंप्यूटर में जरूर होने चाहिए –

1. Microprocessor
2. Ram
3. Hard Disk
4. Monitor
5. Multimedia kit
6. Pointing Device
7. Modem जिसकी स्पीड कम से कम 56 Kilobytes Per Second की हो
8. Operating System Device में जरूर होना चाहिए।
9. Internet Browser ताकि Internet को आपके मोबाइल से Connect करके HTML Pages को Download कर सके।
10. Internet Connection जो कि आप किसी भी मौजूद Provider से ले सकते है।
11. एक Modem जिसके द्वारा आप अपने कंप्यूटर और Internet को आपस मे Connect कर सके।

वही यदि आप Smart Mobile Device या Laptop का इस्तेमाल करते है इंटरनेट को Use करने के लिए तो उसके यह सभी चीज़े पहले से ही **मौजूद** होती है।

इंटरनेट स्पीड क्या है और कैसे चेक करे ?

Internet Speed वह चीज़ होती है जिसके द्वारा **Data** को तेज तरीके से एक जगह से दूसरे जगह तक **Transfer** किया जाता है और इसको **Bites** में मापा जाता है।

यदि आपके कंप्यूटर में कोई **Web Page** धीरे धीरे खुल रहा है तो ऐसे में आपके कंप्यूटर में इंटरनेट **Data**, **Slow** ट्रांसमिट हो रहा या आपके नेटवर्क की **Data Transmission** की क्षमता कम है।

मतलब की आपके **Internet** की स्पीड **Slow** है। वही यदि आपके इंटरनेट की Data को Transfer करने की क्षमता अधिक है तो आपके इंटरनेट की स्पीड **तेज़** होती है।

इंटरनेट स्पीड को कैसे बढ़ाएं ?

ऐसे तो इंटरनेट की स्पीड पूरी तरह से आपके Operator और आपके इंटरनेट प्लान पर ही निर्भर होती है लेकिन आप इन तरीकों का इस्तेमाल करके अपने **Internet Speed** को कुछ हद तक **बढ़ा** सकते है।

1. सबसे पहले यदि आपका Browser Web Pages को Download करने में ज्यादा डेटा इस्तेमाल करता है तो आप उसको बदलकर कोई Fast Browser का इस्तेमाल करे जैसे कि **UC** Browser **या** **Opera** Browser
2. आप अपने मोबाइल में Network के APN को Change करके भी Internet की स्पीड को **बढ़ा** सकते है। लेकिन यह तभी संभव है जब आपको इसके बारे में जानकारी हो जैसे कि **Proxy Address और Host Name के बारे में।**
3. आप अपने Web Browser के Cache को Clear करके भी **Speed** को कुछ हद तक **बढ़ा** सकते है।

इंटरनेट से पैसे कमाना

आज के समय मे बहुत से लोग Internet के माध्यम से **पैसे कमा** रहे है।

लेकिन अगर आपको इसके बारे में जानकारी नही है कि आप कैसे इंटरनेट से पैसे कैसे कमाए , तो चलिए **हम आपको कुछ तरीको के बारे में बता देते है –**

1. **Blogging-** आज के समय मे Blogging बहुत से लोगो के बीच प्रचलित हो गया है। इसका कारण है लोगो का इंटरनेट के प्रति बदलता नज़रिया। सभी लोग आज के समय मे अच्छा पैसा और नाम कमाना चाहते है। लेकिन Blog को जितना आसान **शुरू** करना है उतना ही मुश्किल उसको **Continue** करना भी है।

क्योंकि यहाँ आपको तरह तरह की मुश्किलों का सामना भी करना पड़ता है। कई बार तो बहुत से लोग **निराश** होकर इसको छोड़ भी देते है।

What is a network?

किसी भी दो प्रकार के device को जब आपस में कनेक्ट करते हैं तथा उनसे संबंधित डाटा को आदान प्रदान करते हैं तो ऐसी प्रक्रिया को **Computer network** कहते हैं यह कई तरह से कार्य करती हैं जैसे कंप्यूटर की मात्रा मोबाइल के माध्यम से SERVER आदि के माध्यम से। NETWORK को इस्तेमाल करने के लिए हमें wire अथवा wireless technology के माध्यम से जोड़ा जाता है जिससे विशेष तौर पर कार्य करता है। यह एक प्रकार का Data transfer network प्रणाली भी कहलाता है।जिसमें एक से अधिक कंप्यूटर डिवाइस से जोड़कर कार्य करते हैं या फिर आसान भाषा में अगर कहें कंप्यूटर डिवाइसेज एक दूसरे के माध्यम से डाटा को शेयर करते हैं।तो वह प्रणाली कंप्यूटर नेटवर्क प्रणाली कहलाती है। यह software तथा hardware के मिश्रण से बनी नेटवर्क प्रणाली होती है।

कंप्यूटर नेटवर्क के प्रकार एवम उनसे संबंधित जानकारी

यदि हम **Computer network** के प्रकार की बात करें कई प्रकार के होते हैं।जो अपने अलग-अलग क्षेत्रों में अपने हिसाब से कार्य करते हैं। कोई एक जगह बैठे छोटे से कंप्यूटर से लेकर **Super computer** तक के प्रकार को मैनेज करते हैं। आज हम इन्हीं के बारे में विस्तृत जानकारी आपको मुहैया कराएंगे जोकि निम्नलिखित है।

1.Local Area Network (LAN)

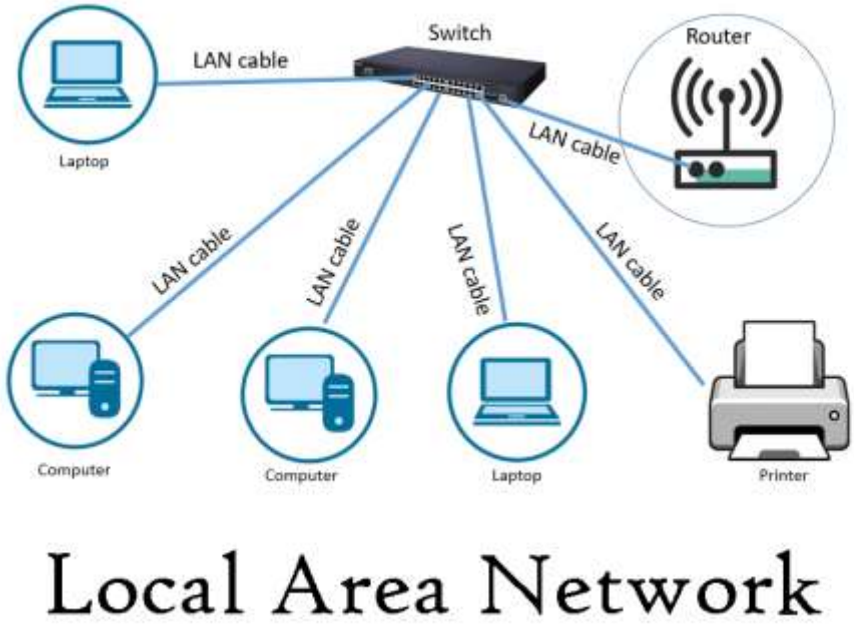

यह एक प्रकार का local computer networking कहलाता है। जैसा कि आपको नाम से ही पता चल रहा होगा या छोटे लेवल पर या फिर छोटे डिस्टेंस में उपयुक्त होने वाली नेटवर्क डिवाइस को कनेक्ट करता है। इसका इस्तेमाल हम स्कूलों दफ्तरों घर पर छोटे-छोटे कंपनियों में होता है। सीधी भाषा में या shorts distance network डिवाइस को कनेक्ट करने के काम आता है।

2.Metropolitan Area Network (MAN)

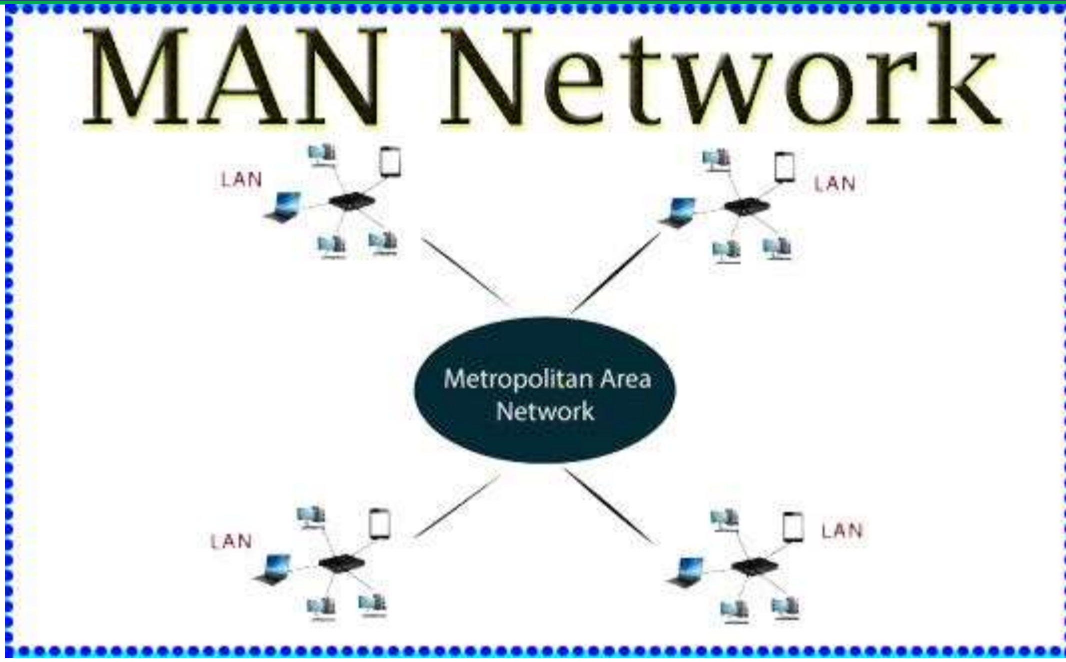

इसका नेटवर्क शेयरिंग LAN से अधिक होता है। यह एक शहर से दूसरे शहर को जोड़ने का कार्य करता है। इसके माध्यम से यदि कोई कंपनी एक शहर में है तथा उसी की ब्रांच दूसरे शहर में है तो यह अपने डिवाइस के माध्यम से उन दोनों को आपस में data sharing करता है और इसका Range में भी अधिक होता है।

Network Hub क्या है

3. Wireless Local Area Network (WLAN)

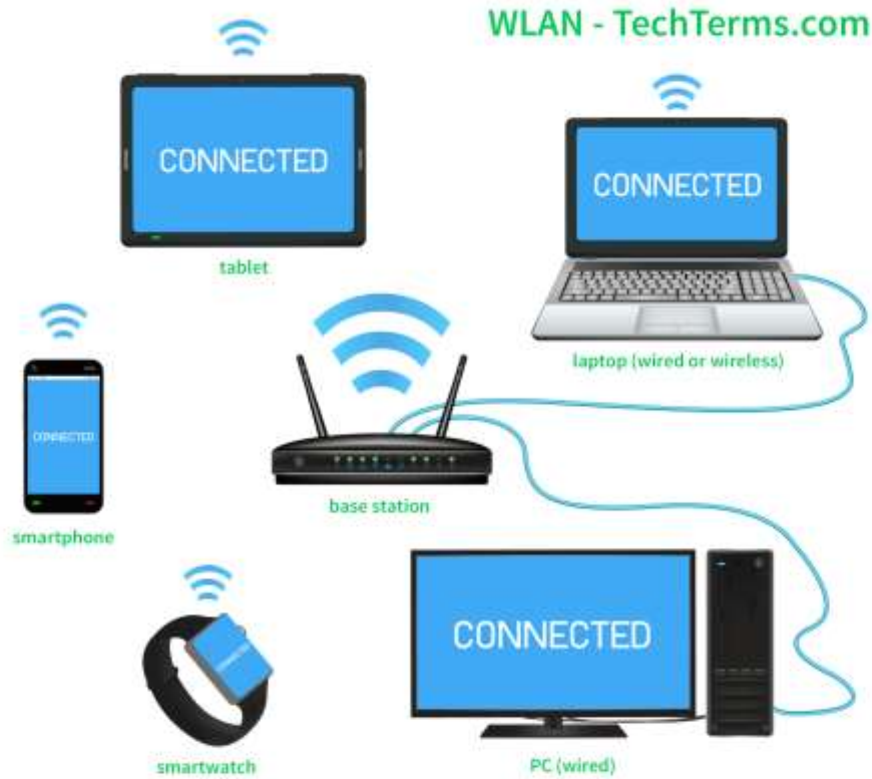

जैसा किसके नाम से ही प्रतीत हो रहा है कि यह बिना wire के यूज होने वाला नेटवर्क प्रणाली है। इसके माध्यम से हम wifi के जरिए एक डिवाइस के दूसरे डिवाइस से जोड़ सकते हैं।यह LAN की तरह ही कार्य करता है परंतु इसमें wire नहीं होते हैं या Satellite wave के द्वारा कार्य करने वाली प्रणाली है।

4.Campus Area Network (CAN)

यह एक प्रकार का Multiple local area network के माध्यम से लिमिटेड एरिया में कनेक्ट होता है। जो लिमिटेड एरिया को कवर करता है। इसका उपयोग Offices, School, Colleges में किया जाता है।यह Corporate area network के नाम से भी जाना जाता है। यह सीधे शब्दों में कहें तो यह एक तरह का प्राइवेट नेटवर्क होता है।

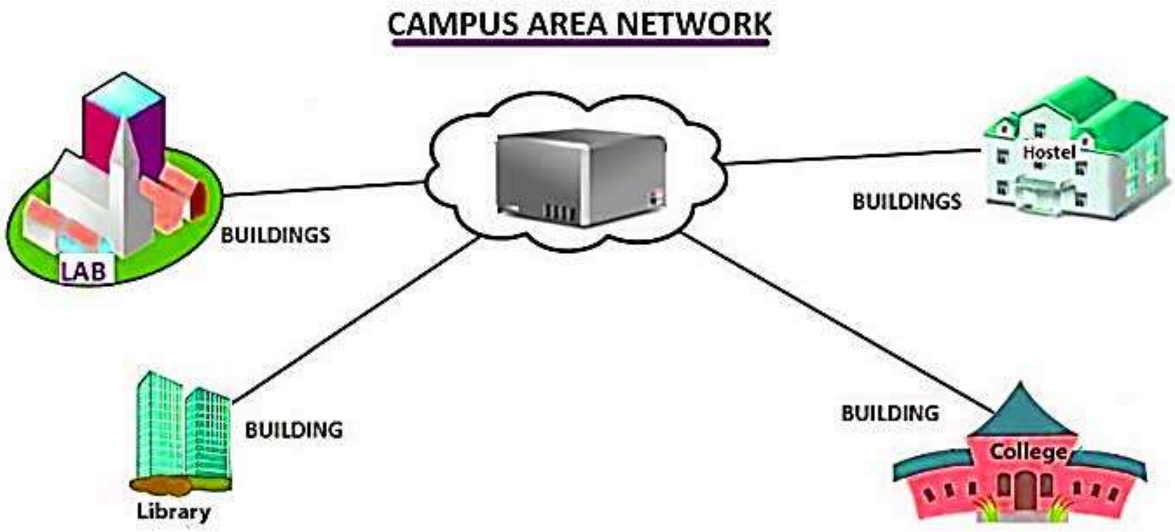

5.Storage Area Network (SAN)

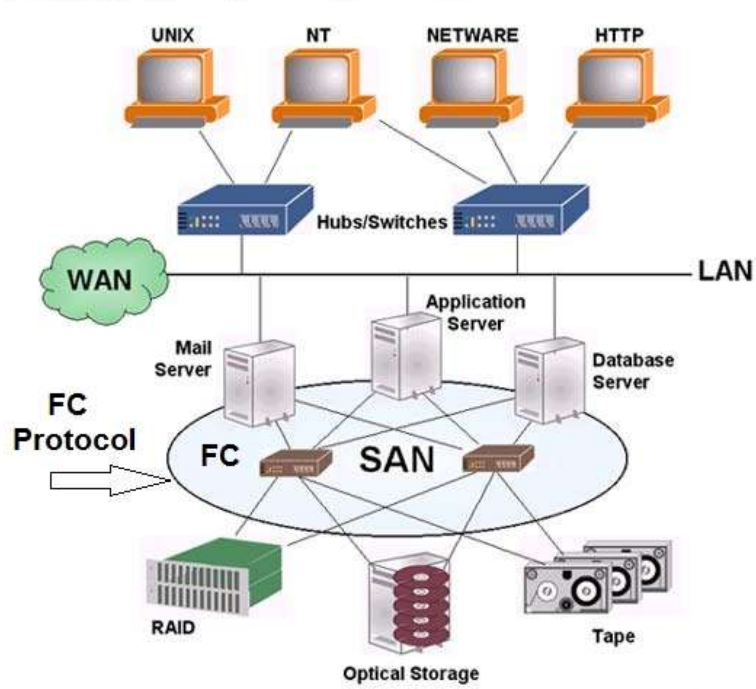

यह नेटवर्क प्रणाली एक प्रकार की High speed transfer प्रणाली कहलाती है इसके माध्यम से किसी भी डाटा को एक जगह से दूसरी जगह भेजने के लिए किया जाता है जोकि बहुत जल्द ही कार्य को संपन्न कर देती है

Multiple server device के द्वारा एक्सेस किया जाता है इस माध्यम से कभी डिवाइसों पर एक बार में ही डाटा ट्रांसफर हो जाते हैं।

6.Personal Area Network (PAN)

जैसा के आपको के नाम से ही मालूम पड़ रहा होगा कि यह एक प्रकार का Personal एवं Private network प्रणाली है। इसके माध्यम से किसी निजी Mobiles, Computers,tablets आदि के डाटा को एक जगह से दूसरे डिवाइस पर शेयर किया जाता है। जो कि बहुत ही आसानी से हो जाता है।इसमें Radio satellite wave का इस्तेमाल किया जाता है इसके मुख्य उदाहरण आपको Bluetooth पता चलता है।

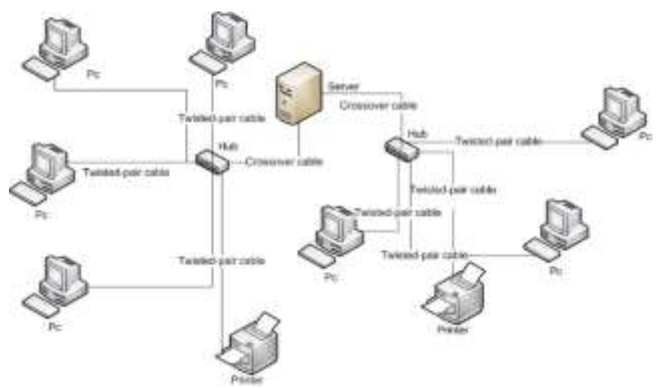

7.Wide Area Network (WAN)

WAN का data sharing एरिया बहुत अधिक होता है।इसका उपयोग किसी एक शहर से दूसरे शहर या फिर किसी एक देश से दूसरे देश में Data transfer की सुविधा को आसान करने के लिए किया जाता है। इसका Range काफी अधिक होता है यह अपने से मिलने जुलने वाले सभी नेटवर्क को एक बार में ही connect कर देता है। इसका मुख्य उदाहरण आपके सामने इंटरनेट मौजूद है जिसके द्वारा आप कहीं भी कुछ भी पूरे विश्व की जानकारी एकत्रित कर सकते हैं

Computer Network Topology नेटवर्क टोपोलॉजी क्या है।

नेटवर्क टोपोलॉजी (Computer Network Topology) "नेटवर्क टोपोलॉजी विभिन्न नोड्स या टर्मिनल को आपस में जोड़ने का तरीका हैं। इसमें यह बताया जाता है की नेटवर्क के विभिन्न नोड किस प्रकार एक – दूसरे से जुड़े होते है तथा कैसे एक -दूसरे के साथ संचार (**communication**) स्थापित करते है।"

Computers को आपस में जोड़ने एवं उसमे डाटा संचार (Data Flow) की विधि टोपोलॉजी कहलाती है। टोपोलॉजी किसी नेटवर्क में कम्प्यूटर के ज्यामिति व्यवस्था (Geometric arrangement) को कहते है। यह विभिन्न नोड्स के बिच भौतिक संरचना को दर्शाता है।

Types Of Computer Network Topology In Hindi नेटवर्क टोपोलॉजी के प्रकार।

कंप्यूटर में नेटवर्क टोपोलॉजी (Network Topology) निम्न प्रकार की होती है।

1. रिंग टोपोलॉजी (Ring Topology)
2. बस टोपोलॉजी (Bus Topology)
3. स्टार टोपोलॉजी (Star Topology)
4. मेश टोपोलॉजी (Mesh Topology)
5. ट्री टोपोलॉजी (Tree Topology)

रिंग टोपोलॉजी (Ring Topology) :-

इसमें सभी कम्प्यूटर एक गोलाकार आकृति में लगे होते है। प्रत्येक कम्प्यूटर अपने अधीनस्थ (subordinate) कम्प्यूटर से जुड़े होते है, इस नेटवर्क में सभी नोड्स में समान रूप से इंटेलिजेंस (Data Flow) होता है। इस कम्प्यूटर में कोई होस्ट, मुख्य या कंट्रोलिंग कम्प्यूटर नहीं होता। इसमें डेटा का प्रवाह हमेशा एक ही दिशा में होता है। परन्तु किसी भी एक केबल या नोड में कठिनाई आने पर दूसरे दिशा से संचार संभव है।

रिंग नेटवर्क (Ring Topology) में साधारण गति से डाटा का आदान-प्रदान होता है। तथा एक कम्प्यूटर से किसी दूसरे कम्प्यूटर को डाटा प्राप्त करने पर उसके मध्य के अन्य कम्प्यूटरो को यह निर्धारित करना होता है कि उक्त डाटा उनके लिए है या नहीं। यदि यह डाटा उसके लिए नहीं है तो उस डाटा को अन्य कम्प्यूटर में आगे (Pass) किया जाता है, आगे बढ़ा दिया जाता है।

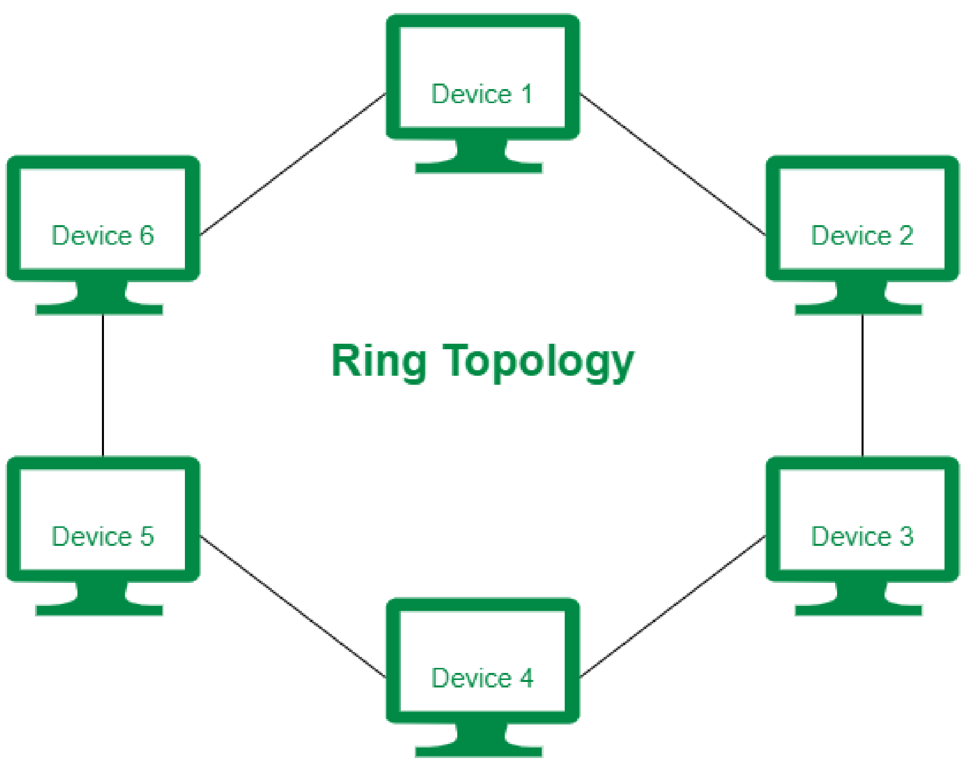

बस टोपोलॉजी (Bus Topology) :-

बस टोपोलॉजी (Bus Topology) में सभी नोड्स एक ही केबल में जुड़े रहते हैं। कोई भी नोड किसी दूसरे नोड को डेटा प्रेषित करना चाहता है तो उसे देखना होता है की बस में कोई डेटा प्रवाहित तो नहीं हो रहा है। बस खली रहने पर नोड, डेटा प्रेषित कर सकता है। डेटा प्राप्त करने के लिए हर नोड के पास इतनी इंटेलिजेंस होनी चाहिए की वह बस से अपने पता (address) ज्ञात कर डेटा प्राप्त कर सके।

Bus Topology में कम केबल की आवश्यकता होती है। तथा कोई नया नोड जोड़ना आसान होता है। परन्तु प्रमुख ट्रांसमिशन लाइन में कठिनाई आने पर सारा नेटवर्क विफल हो जाता है।

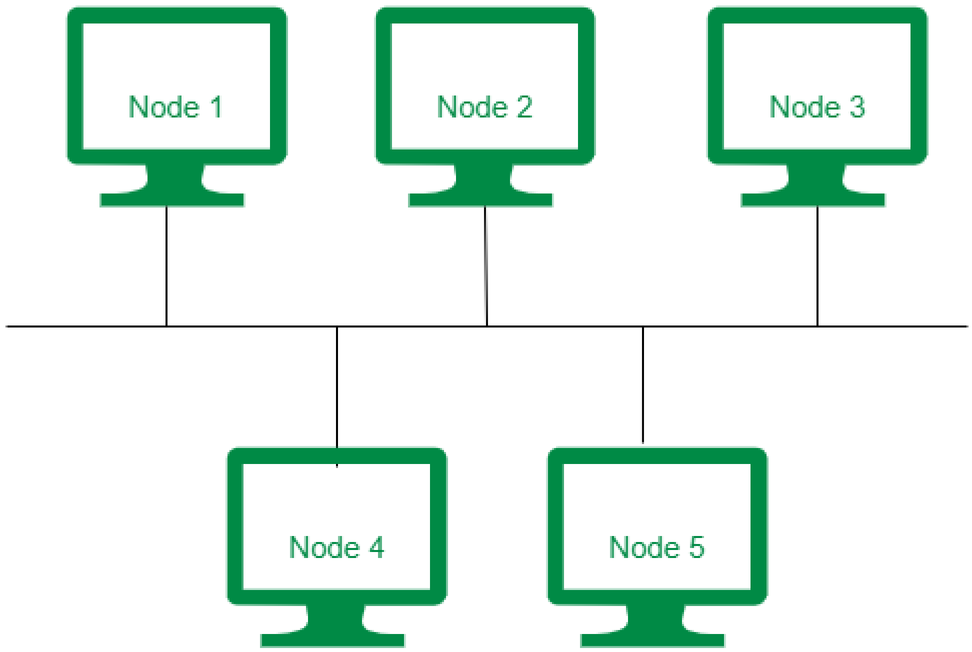

Bus Topology

स्टार टोपोलॉजी (Star Topology) :-

इस नेटवर्क में एक केन्द्रीय नोड (Central Node) होता है। जो इंटेलिजेंस से युक्त होता है। बाकी नोड्स इससे जुड़े रहते है।स्टार टोपोलॉजी नेटवर्क में एक होस्ट कम्प्यूटर होता है। जिसे सीधे विभिन्न लोकल कम्प्यूटरो से जोड़ दिया जाता है। लोकल कम्प्यूटर आपस में होस्ट कम्प्यूटर द्वारा जोड़ा जाता है। होस्ट कम्प्यूटर द्वारा ही पुरे नेटवर्क को कंट्रोल किया जाता है। इस केन्द्रीय नोड को हब (Hub) कहते है।

स्टार टोपोलॉजी (Star Topology) में कोई एक केबल में कोई कठिनाई आने पर एक ही नोड विफल होता है परन्तु अगर हब में कोई कठिनाई आती है, तो सारा नेटवर्क विफल हो जाता है।

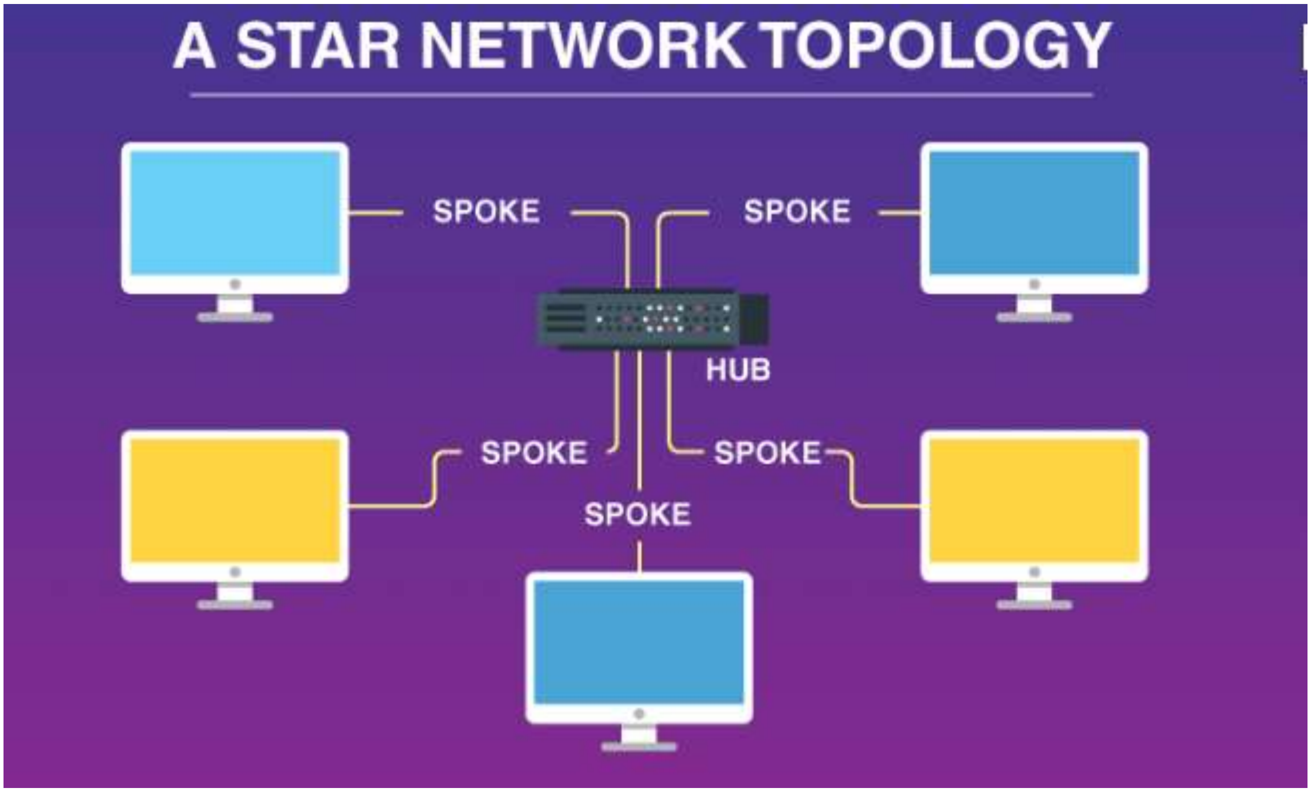

मेश टोपोलॉजी (Mesh Topology) :-

मेश टोपोलॉजी (Mesh Topology) को मेश नेटवर्क भी कहा जाता है। मेश एक नेटवर्क टोपोलॉजी है, जिसमे संयंत्र (Devices) नेटवर्क नोड (Nodes) के मध्य कई अतिरिक्त अन्तः सम्बन्ध (interconnections) से जुड़े होते है। अर्थात मेश टोपोलॉजी में प्रत्येक नोड नेटवर्क के अन्य सभी नोड से जुड़े होते है। यह नेटवर्क उच्च ट्रैफिक स्थिति में मार्ग को ध्यान में रखकर उपयोग किया जाता है। इसमें किसी भी स्त्रोत (source) से कई मार्गों से संदेश भेजा जा सकता है।

पूर्णतः इन्टरकनेक्टेड मेश नेटवर्क खर्चीला है, क्योकि इसमें ज्यादा केबल तथा हर नोड में इंटेलिजेंस की आवश्यकता होती है। इस नेटवर्क में उच्च सुरक्षा अनुप्रयोग में डाटा प्रेषित किया जाता है।

Mesh Network

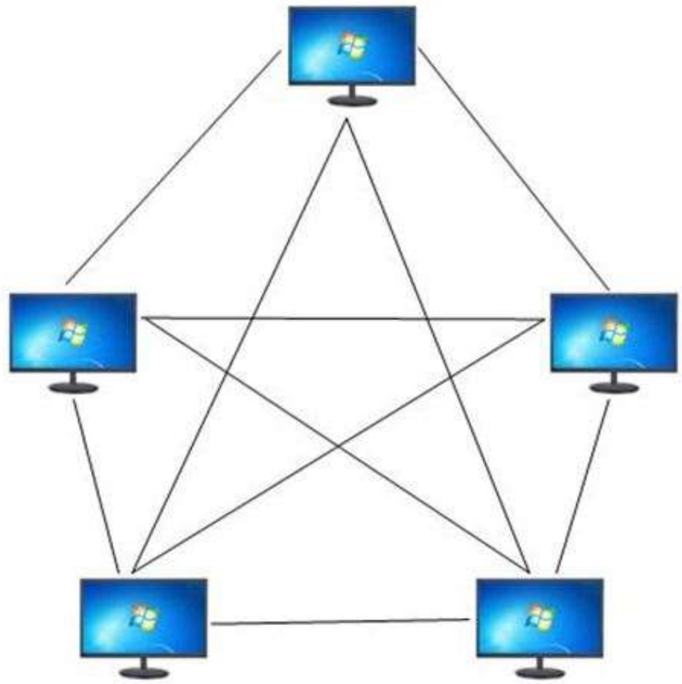

Topology

ट्री टोपोलॉजी (Tree Topology) :-

ट्री टोपोलॉजी में स्टार तथा बस दोनों टोपोलॉजी के लक्षण होते है। इसमें भी स्टार टोपोलॉजी की तरह एक होस्ट कम्प्यूटर होता है और बस टोपोलॉजी की तरह सारे कम्प्यूटर एक ही केबल से जुड़े रहते है। यह नेटवर्क एक पेड़ की तरह ही दिखाई देता है। इसलिए इसे ट्री टोपोलॉजी (Tree Topology) कहा जाता है।

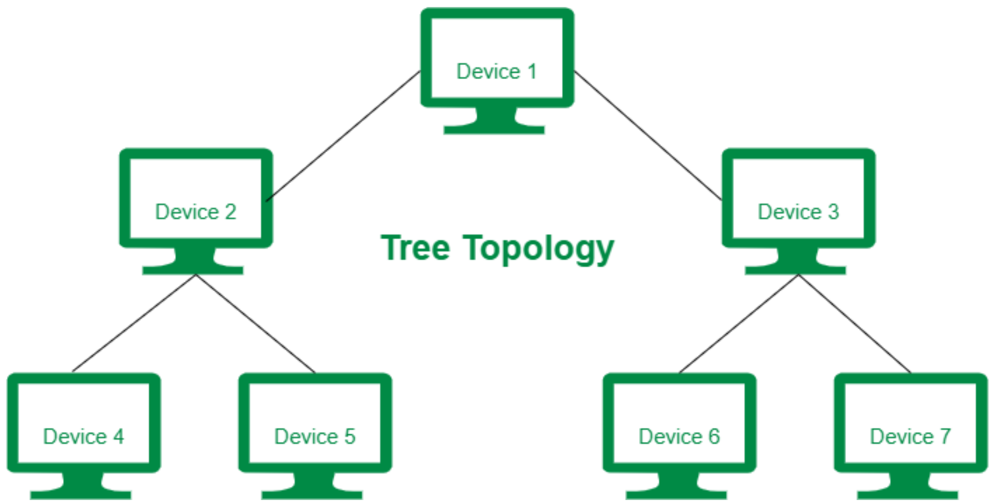

World Wide Web क्या है? (What is WWW in Hindi?)

वर्ल्ड वाइड वेब को web के नाम से भी जाना जाता है यह इन्टरनेट पर सबसे ज्यादा use होने वाला service है।यह कई सारे web servers और clients को एक साथ जोड़ता है। Web server में HTML documents, images, videos और कई प्रकार के अन्य online contents store रहते हैं जिन्हें वेब की मदद से access किया जा सकता है।

दुनियाभर में जितने भी websites और web pages हैं जिन्हें आप अपने web browser पर देख पाते हैं वे सभी वेब से जुड़े होते हैं और इन्हें access करने के लिए HTTP (Hypertext Transfer Protocol) का उपयोग करना होता है।

इसे आप कई सारे web servers का एक collection भी कह सकते हैं। जब भी आप अपने ब्राउज़र के address bar पर किसी वेबसाइट के URL से पहले www लगाएं तो समझ जाएँ की वह वेबसाइट किसी वेब सर्वर पर स्टोर है जो की वेब से जुड़ा हुआ है इसलिए आप उसे access करने के लिए वर्ल्ड वाइड वेब की मदद ले रहे हैं।

जब भी आप world wide web के जरिये किसी वेबसाइट को access करते हैं तो इस काम के लिए नीचे दिए गये कुछ technologies का use होता है:

HTML (Hypertext Markup Language): यह एक प्रकार का language है जिससे web page बनाया जाता है। एक वेबसाइट कई सारे web pages से मिलकर बना होता है।

Web Server: सर्वर एक प्रकार का कंप्यूटर होता है जिसमे वेबसाइट के सारे contents जैसे web pages, images, videos आदि को store किया जाता है। सर्वर world wide web से जुड़ा होता है ताकि इन contents को दुनिया के किसी भी कोने से इंटरनेट के जरिये access किया जा सके।

HTTP (Hypertext Transfer Protocol): किसी भी computer network में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए कुछ नियम बनाये गये हैं जिन्हें protocol कहा जाता है। वेब में कोई information सर्वर से आपके कंप्यूटर तक पहुँचता है तो इसके लिए HTTP protocol का उपयोग होता है।

URL (Uniform Resource Locator): यह एक प्रकार का एड्रेस है जो यह बताता है की कोई document वेब में किस location पर उपलब्ध है।

Web Browser: आसान भाषा में यदि कहें तो यह एक software है जिसका उपयोग आप हर दिन अपने कंप्यूटर या मोबाइल में किसी वेबसाइट को access करने के लिए करते हैं। इसमें एक address bar होता है जिसपर URL enter करके उस particular website तक पहुँच सकते हैं।

इसकी शुरुआत कैसे हुई? – वर्ल्ड वाइड वेब का इतिहास (History of World Wide Web in Hindi)

वर्ल्ड वाइड वेब का आविष्कार सन 1989 में एक ब्रिटिश कंप्यूटर साइंटिस्ट Tim Berners Lee ने किया था तब वे CERN नामक संस्था में एक software engineer थे। वे 'Enquire' नामक एक प्रोजेक्ट में काम कर रहे थे जिसमे उन्हें उस संस्था में काम करने वालों का एक डेटाबेस बनाना था।

प्रोजेक्ट में काम करते समय उन्हें एहसास हुआ की information को manage करना काफी मुश्किल है क्योंकि data अलग-अलग computer और अलग-अलग program में store थे ऐसे में data को centralize करना और उसे एक जगह स्टोर करना कठिन काम था।

इस समस्या से निपटने के लिए उनके दिमाग में hypertext का concept आया। दरअसल उस समय इंटरनेट की खोज हो चुकी थी और पहले से ही लाखों computers internet से जुड़ चुके थे तो उन्होंने सोचा की क्यूँ न कुछ ऐसा बनाया जाय जिससे इन computers के बीच information का आदान-प्रदान हो सके और उन्होंने हाइपरटेक्स्ट पर काम करना शुरू कर दिया।

इंटरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब के बीच अंतर (WWW Vs. Internet)

ज्यादातर लोग वर्ल्ड वाइड वेब और इंटरनेट को एक ही समझते हैं जबकि दोनों में अंतर है। इन्टरनेट हमें ईमेल, Telnet, FTP जैसे कई सारे services provide करता है WWW भी उन्ही internet services में से एक है। चलिए जानते हैं इसके अलावा वेब और इंटरनेट में क्या-क्या अंतर है:

	Internet	WWW
1.	इंटरनेट की खोज सन 1960 के दशक में हुई थी।	WWW की खोज Tim Berners Lee ने सन 1989 में की थी।
2.	इन्टरनेट कई सारे computer networks का एक समूह है यह computers को आपस में केबल, सॅटॅलाइट, ऑप्टिकल फाइबर आदि की मदद से जोड़ता है।	वेब को हम इन्टरनेट पर उपलब्ध जानकारियों का एक समूह कह सकते हैं और ये जानकारियाँ वेबसाइट के रूप में हम तक पहुँचती हैं।
3.	पहले इसे ARPANET के नाम से जाना जाता था।	वेब को NSFNet कहा जाता था।
4.	इंटरनेट IP (Internet Protocol) की सहायता से काम करता है।	वेब HTTP (HyperText Transfer Protocol) का उपयोग करता है।
5.	यह कई hardware से मिलकर बना है यह एक हार्डवेयर इन्फ्रास्ट्रक्चर है।	इसमें software का उपयोग होता है यानि यह invisible है।
6.	इंटरनेट server, router, satellite, cables, towers जैसे hardware से चलता है।	वेब को चलाने के लिए web browser, hypertext, protocol, html आदि की जरुरत पडती है।
7.	इंटरनेट एक स्वतंत्र नेटवर्क है यह WWW पर निर्भर नही है।	बिना इन्टरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब नही चल सकता।
8.	नेटवर्क से जुड़े डिवाइस का लोकेशन IP address से पता चलता है।	वेब में किसी जानकारी को हम URL के माध्यम से access कर पाते हैं।

World Wide Web कैसे काम करता है?

Web एक प्रकार के client-server model पर काम करता है जहाँ आपका web browser client program होता है और सारे information किसी web server पर स्टोर रहते हैं। क्लाइंट सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए सर्वर को रिक्वेस्ट भेजता है जिसके जवाब में सर्वर उन सूचनाओं को वेब पेज के रूप में क्लाइंट को भेज देता है जिसे हम स्क्रीन पर देख पाते हैं। चलिए step by step तरीके से जानते हैं की आखिर World Wide Web कैसे काम करता है:

1. किसी वेब साईट या वेब पेज को access करने के लिए आप सबसे पहले वेब ब्राउज़र open करते हैं।
2. वेब ब्राउज़र के एड्रेस बार में उस वेबसाइट/वेबपेज का URL enter करते हैं।

3. URL किसी वेब पेज के IP address का एक human readable form होता है जिससे उस वेब पेज का लोकेशन पता चलता है।
4. HTTP protocol के माध्यम से URL को DNS (Domain Name Server) पर भेजा जाता है।
5. DNS उस URL को IP address में बदल देता है ताकि system उसे समझ सके और उसे वापस browser को भेजता है।
6. IP address से browser को पता चल जाता है की वह website/web page कौन से सर्वर में स्टोर है।
7. उस सर्वर को उस वेबसाइट/वेबपेज को access करने के लिए request भेजा जाता है।
8. जब सर्वर को वह पेज मिल जाता है तो उसे वह HTML page के रूप में ब्राउज़र को भेज देता है।
9. HTML पेज को आपका ब्राउज़र आपके स्क्रीन पर render करता है।

E-Mail, Social Networking & e-Governance Services (ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग और ई-गवर्नेन्स सर्विसेज़)

Introduction (प्रस्तावना)

दैनिक जीवन में संचार एक आवश्यक कारक है। कार्यों को पूरा करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे के साथ संवाद करना होता है। हम कह सकते हैं कि संचार एक जगह से दूसरी जगह सूचना भेजने और प्राप्त करने का तरीका है। सफलता प्राप्त करने के लिए, संचार अधिक प्रभावी होना चाहिए जो एक दो-तरफा प्रक्रिया है।

सच्चे सहयोग के लिए प्रभावी संचार की आवश्यकता होती है। संचार इंटरनेट का सबसे लोकप्रिय उपयोग है। इंटरनेट के माध्यम से आप दुनिया भर में अपने दोस्तों परिवार के सदस्यों, टीम के सदस्यों आदि जैसे अन्य व्यक्तियों के साथ संवाद और सहयोग कर सकते हैं।

इंटरनेट संचार का अर्थ सूचनाओं और विचारों को इंटरनेट के माध्यम से साझा करना है। इसका सबसे अधिक लाभ यह है कि अपने घर में बैठे-बैठे ही आप किसी से भी, कहीं भी और कभी भी कनेक्ट हो सकते हैं।

Objectives (उद्देश्य)

इस अध्याय में निम्नलिखित के बारे में पढ़ेगे

- ई-मेल की मूल बातें
- ई-मेल का प्रयोग
- ई-मेल क्लाइंट खोलना
- ई-मेल बनाना और भेजना
- ई-गवर्नेन्स सर्विसेज़
- सोशल नेटवर्किंग और उसके प्रकार
- उमंग एप
- डिजिटल digi locker

What is an E-mail? (ई-मेल क्या है?)

इलेक्ट्रॉनिक मेल या ई-मेल का अर्थ है संदेशों का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से आदान-प्रदान। दूसरे शब्दों मे, किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को संदेश भेजने या लेने के लिए ई-मेल एक सस्ता, भरोसेमंद और गतिवान साधन है। ई-मेल प्राप्त करने के लिए एक ई-मेल एकाउन्ट और ई-मेल एड्रेस की आवश्यकता होती है। दूसरे व्यक्ति को ई-मेल भेजने के लिए भी हमें उनके ई-मेल एड्रेस की आवश्यकता होती है। ई-मेल को सही व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए ई-मेल एड्रेस को सही तरीके से लिखा जाना चाहिए।

How E-mail Works? (ई-मेल कैसे काम करता है?)

किसी ई-मेल को भेजने के लिए निम्न चरणों का अनुसरण करें-

- सबसे पहले अपने सिस्टम को इंटरनेट से कनेक्ट करें। ई-मेल प्रोग्राम स्टार्ट करें, जैसे -जीमेल, याहू, रेडिफ, हा ॉटमेल, इत्यादि।
- अपने एकांउट को लॉग इन करके Compose बटन पर क्लिक करें। 'न्यू मैसेज' नामक एक विंडो दिखायी देती है।
- 'To' बॉक्स में वह पता लिखें जिस पर आपको मैसेज भेजना हो। इसी विंडो में आप एक से ज्यादा ई-मेल एड्रेस लिख सकते हैं।
- दिये गए उचित स्थान पर मेल का Subject लिखें।
- दिये गए टेक्स्ट एरिया में अपना मैसेज टाइप करें।
- अन्त में, मैसेज भेजने के लिए Send बटन पर क्लिक करें।

E-mail addressing (ई-मेल एड्रेसिंग)

ई-मेल एड्रेस एक मानक रूप में लिखे जाते हैं। यह दो भागों में विभाजित होते हैं-

- डोमेन नेम, जो कि ई-मेल सर्विस प्रोवाइडर्स द्वारा दिये जाते हैं।
- यूजर नेम

यूजर नेम और डोमेन नेम को एक विशेष संकेत @ चिह्न द्वारा अलग किया जाता है जो 'at' के रूप में पढ़ा जाता है।
ई-मेल प्रदाता वह वेबसाइट है जो ई-मेल को होस्ट करता है। अर्थात् जिसके सर्वर पर ई-मेल स्टोर होती है। ई-मेल प्रदाता वह कम्पनी हो सकती है जिसके द्वारा हम इन्टरनेट से जुड़ते हैं। उदाहरणतः बीएसएनएल, एमटीएनएल या फिर कोई नि:शुल्क वेब आधारित ई-मेल सर्विस हो सकती है। जैसे- याहू, जी-मेल, आउटलुक एक्सप्रेस (पूर्व में हा ॉटमेल) आदि। ई-मेल सर्विस किसी कम्पनी, स्कूल या किसी संगठन द्वारा भी होस्ट की जा सकती है। ई-मेल एड्रेस केस-सेंसिटिव नहीं होते हैं। इसमें कहीं भी स्पेस नहीं देना चाहिए।
वेब डोमेन का प्रत्यय निम्न हो सकता है-

– .com (वाणिज्यि संगठन);
– .gov (सरकारी संस्था);
– .edu (शैक्षणिक शाखाएँ);
– .org (गैर लाभकारी संगठन);

ई-मेल सर्विस प्रदाता के पास एकाउन्ट बनाने पर एक ई-मेल एड्रेस प्राप्त होता है। एक एकाउन्ट में यूजरनेम, ई-मेल एकाउन्ट प्रदाता, पासवर्ड और ई-मेल की जानकारी होती है।

जबकि किसी विशेष ई-मेल एड्रेस पर ई-मेल भेजी जाती है तो वह ई-मेल होस्ट के सर्वर पर स्टोर कर दी जाती है। अब जब प्राप्तकर्ता अपने ई-मेल एकाउन्ट पर ला ॉग इन करता है तो सभी नए संदेश ई-मेल क्लाइन्ट पर डाउनलोड हो जाते हैं।

Structure of E-mail (ई-मेल की संरचना)

ई-मेल संदेश में विभिन्न घटक शामिल हैं- मेल हैडर, अभिवादन, टेक्स्ट और हस्ताक्षर। यह घटक निम्नलिखित आरेख में वर्णित हैं-

- **E-mail Header (ई-मेल हैडर)**

ई-मेल संदेश की पहली पाँच पंक्तियों को ई-मेल हैडर कहा जाता है। हैडर भाग में निम्नलिखित फील्ड शामिल हैं-

- **From –** यह फील्ड प्रेषक के एड्रेस को दर्शाता है जिस दिन ई-मेल भेजी गयी थी।
- **Date –** यह उस दिनांक को दर्शाता है जिस दिन ई-मेल भेजी गयी थी।
- **To –** यह फील्ड प्राप्तकर्ता के एड्रेस को दर्शाता है अर्थात् जिसको ये मेल भेजी गयी है।
- **Subject –** ई-मेल का उद्देश्य इस फील्ड द्वारा दर्शाया जाता है। यह सटीक और बिंदुवत होना चाहिए।
- **CC- CC** इसका अभिप्राय कार्बन कॉपी से है। इसमें उस प्राप्तकर्ता के एड्रेस शामिल होते हैं जिनको सिर्फ उस मेल की सूचना देनी होती है।
- **BCC- BCC** इसका अर्थ ब्लाइंड कार्बन कॉपी होता है। इसका उपयोग तब किया जाता है जब हम प्राप्तकर्ताओ में से एक या एक से अधिक को यह नहीं बताना चाहते कि संदेश में किसी और को जोड़ा गया था।
- **Greeting (ग्रीटिंग)**

अभिवादन वास्तविक संदेश का आरम्भ भाग है। उदाहरण के लिए, हाय सर या हाय दोस्तो आदि।

- **Text (टेक्स्ट)**

यह संदेश की वास्तविक सामग्री का प्रतिनिधित्व करता है।

- **Signature (सिग्नेचर)**

यह ई-मेल संदेश का अंतिम भाग है। इसमें प्रेषक का नाम, पता और संपर्क नंबर शामिल होता है।

Using E-mail (ई-मेल कर प्रयोग)

ई-मेल का प्रयोग करने के लिए एक ई-मेल एकाउंट होना आवश्यक है। इसके लिए किसी भी निःशुल्क ई-मेल सर्विस प्रदाता के साथ एकाउन्ट बनाया जा सकता है। ब्राउजर के एड्रेस बार में ई-मेल होस्टिंग साइट का एड्रेस डालें और एकाउन्ट बनायें।

Opening an E-mail Account (ई-मेल एकाउन्ट बनाना)

- **With Yahoo! Mail (याहू! मेल पर)**

होम पेज पर क्रिएट एकाउन्ट पर क्लिक करें और सभी आवश्यक प्रविष्टियों को भरें।

- **With Outloock.com (आउटलुक.कॉम पर)**

होम पेज पर साइन अप क्लिक करें और सभी आवश्यक प्रविष्टियों को भरें।

- **With Gmail (जीमेल पर)**

होम पेज पर क्रिएट ऑन एकाउन्ट पर क्लिक करें और सभी आवश्यक प्रविष्टियों को भरें।

- क्रिएट एकाउन्ट पर क्लिक करने पर निम्न साइन-अप फ़ोर्म प्रदर्शित होगा। आवश्यक जानकारी देकर निर्देशों का पालन करें।
- अब अपना फोन नम्बर भरकर अपने एकाउन्ट की पुष्टि करें। गूगल सुरक्षा के द्रष्टिगत दो-चरणीय सत्यापन का प्रयोग करता है।
- गूगल से एक टेक्स्ट संदेश प्राप्त होगा जिसमें एक सत्यापन कोड होगा। कोड भरकर एकाउन्ट का सत्यापन पूर्ण करें।
- अब अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे निक नेम और जन्मदिन भरें।
- गूगल की सेवा की शर्तों और गोपनियता नीति की समीक्षा करें फिर आई एग्री पर क्लिक करें।
- आपका एकाउन्ट बन गया है।
- पहली बार साइन इन ही होते है।

Mailbox: Inbox Outbox

एक बार एकांउट बनाने के बाद आपको ई-मेल प्राप्त होने लगेंगे। जिसमें सबसे पहली ई-मेल सेवा प्रदानदाता की होती है। आपके एकांउट की सभी ई-मेल एक मेल बॉक्स में स्टोर हो जाती हैं। आपके द्वारा प्राप्त ई-मेल का इन बाक्स में संग्रहित किया जाता है, जबकि, एक आउटबॉक्स वह जगह है जहाँ आउटगोंइग ई-मेल अस्थायी रूप से संग्रहित होते है। एक संदेश आउटबॉक्स में तब तक संग्रहित किया जाता है। जब तक कि इसे सफलतापूर्वक प्राप्तकर्ता को नहीं भेजा जाता है। एक बार ई-मेल भेजे जाने के बाद, इसे आउटबॉक्स से स्थानांतरित कर दिया जाता है और सेंट आइटम्स में संग्रहित किया जाता है। आपके द्वारा हटाए गए ई-मेल को डिलेटेड आइटम में संग्रहित किया जाता है जिसे स्पैम भी कहा जाता है।

- **Inbox (इनबॉक्स)**

इनबॉक्स ई-मेल एकाउंट में सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है जहाँ सभी प्राप्त ईमेल देखे एवं एक्सेस किये जा सकते हैं। यह सभी प्राप्त ईमेल को एक टेबल में दिनांक के हिसाब से व्यवस्थित करके रखता है, जिससे आसानी से किसी ईमेल को खोजा जा सके।

- **Outbox (आउटबॉक्स)**

आउटबॉक्स वह जगह है जहाँ भेजे गए सभी डेटा को तब तक स्टोर किया जाता है जब तक कि यह पूरी तरह से भेजा नहीं जाता है। सेंट मेल नामक एक खंड भी है, जिसमें पूरी तरह से वितरित ईमेल की सूची है। अंतर केवल आउटबॉक्स का है जो भेजे गए ईमेल को डिलीवर नहीं करता है और पेंडिंग रखता है, जबकि सेंट बॉक्स पूरी तरह से भेजे गए ईमेल की सूची रखता है।

यह वो जगह है जहाँ संदेश बनाए गए है लेकिन भेजे नहीं गए है और यहाँ तक कि भेजे जाने कि लिए कतारबद्ध नहीं हैं। दूसरे शब्दो में हम जो भी मैसेज कम्पोज करते है और उसे सेव करतें है, वह संग्रहित होता है।

- **Junk (जंक)**

जंक फोल्डर ईमेल एकाउंट का वह हिस्सा होता है जो कोई फेक या स्पैम ईमेल जिसमें वायरस जुड़ा हो, मेलवेयर, स्पाईवेयर हो या ऐसा कुछ जो आपका कीमती डाटा को चुरा या हैक करता हो, ऐसे ईमेल इस फोल्डर में स्टोर होते हैं। ईमेल क्लाइंट एप्लीकेशन इसे स्वतः पहचान कर जंक फोल्डर में भेजा है ताकि आप इन चीजों से बच सकें।

- **Sent Items (सेंट आइटम्स)**

यह वो स्थान है जहाँ डिलीवर किए गए सभी ईमेल सूचीबद्ध होते हैं और उनकी समीक्षा की जा सकती है। आउटबॉक्स और सेंट बॉक्स या आइटम के बीच अंतर पर ऊपर चर्चा की गई है।

- **Deleted Items (डिलीट आइटम्स)**

यह ईमेल एकाउंट का वो हिस्सा है जिसमें यूजर द्वारा डिलीट किये गये ईमेल स्टोर होते हैं, जिसे आप आगे चलकर अपनी जरूरत के हिसाब से इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

Creating and sending a new E-mail (ई-मेल लिखना और भेजना)

मेल लिखने के लिए कम्पोज विंडो का प्रयोग होता है। इसके लिए बाएँ मेन्यू पेन में कम्पोज मेल पर क्लिक करें।
अब निम्न क्रमानुसार करें:

- **टू:** फील्ड में एक या अधिक प्राप्तकर्ताओं के नाम अल्पविराम (,) से अलग-अलग करके लिखें। प्राप्तकर्ताओं के नाम कॉन्टैक्ट सूची में से भी चुने जा सकते हैं।
- **सब्जैक्ट:** फील्ड में अपने संदेश का विषय प्रविष्ट करें।
- **बाॅडी:** फील्ड में संदेश प्रविष्ट करें। विंडो के नीचे दिए गए टेक्स्ट फॉरमेटिंग को फॉर्मेट किया जा सकता है।
- मेल भेजने के लिए सैंड पर क्लिक करें।

Replying to an E-mail message (ई-मेल संदेश का उत्तर देना)

किसी भी मेल का उत्तर देने के लिए उसको पढ़ने के लिए खोलें और रिप्लाई पर क्लिक् करें। अगर सीसी और बीसीसी प्राप्तकर्ताओं को भी जवाब देने के लिए रिप्लाई टू ऑल पर क्लिक करें। कम्पोज मेल विंडो खुल जाएगी। अब मेल का रिप्लाई टाइप करें।

Forwarding an E-mail message (ई-मेल संदेश को आगे भेजना)

किसी ई-मेल को फाॅर्वर्ड करने के लिए उसे पढ़ने के लिए खोलें और फाॅर्वर्ड पर क्लिक करें। प्राप्तकर्ताओं का एड्रेस टू सीसी, बीसीसी में प्रविष्ट करें। मूल संदेश में अपना संदेश जोड़कर सैंड पर क्लिक करें।

Searching e-mails (ई-मेल खोजना)

जैसे-जैसे इनबॉक्स में ई-मेल की संख्या बढ़ती है इनका प्रबंधन आवश्यक हो जाता है। हम इन्हें साॅर्ट, डिलीट और आर्चिव कर सकते हैं।

- मेल को डिलीट करने के लिए मेल पढ़ते समय डिलीट दबाएँ।
- किसी मेल को आर्चिव करने के लिए उसे पढ़ते समय आर्चिव पर क्लिक करें।

जब किसी मेल को आर्चिव किया जाता है तो वह सिर्फ इनबॉक्स से हट जाती है मगर डिलीट नहीं होती है। इसे देखने के लिए बाएँ पेन के मोर ड्राप-डाउन मेन्यू में ऑल मेल पर क्लिक करें।

- एक बार मे एक से अधिक संदेशों को डिलीट या आर्चिव करने के लिए उन सभी के आगे सही का निशान लगाएँ (चैक ऑल पर क्लिक करके) और फिर डिलीट या आर्चिव पर क्लिक करें।
- किसी संदेश को ढूँढना।

पेज के सबसे ऊपर सर्च बॉक्स में खोज के मापदंड जैसे भेजने वाले का नाम, दिनांक और विषय प्रविष्ट करें। खोज के नतीजे इनबॉक्स में प्रदर्शित हो जाएँगे।

- ई-मेल को सार्ट करना।

सेटिंग्स आइकन पर क्लिक करें।
इनबॉक्स टैब पर क्लिक करें।
डिफाॅल्ट, इम्पोर्टेन्ट फर्स्ट, अनरैड फर्स्ट, आदि किसी भी विकल्प को चुनें। सेव चेंजेस पर क्लिक करें।

इनबॉक्स में सोर्टेड ई-मेल की सूची प्रदर्शित होगी।

Attaching file with E-mail (ई-मेल द्वारा दस्तावेज भेजना)

अटैचमेंट सामान्यतः एक फाइल होती है जिसे मेल के साथ भेजा जाता है। किसी फाइल को अटैच करने के लिए निम्न क्रम अनुसरण करें:

- कम्पोज विंडो के नीचे बने पेपर क्लिप आइकन पर क्लिक करें।
- जिस फाइल को अटैच करना है उस फाइल को अपलोड डायलाॅग बॉक्स में चुनें। अब ओपन पर क्लिक करें।
- अटैचमेंट अपलोड होने लगेगी।
- बाकी ई-मेल भी कम्पोज करें और सेंड पर क्लिक करें।

E-mail Signature (ई-मेल सिग्नेचर)

सिग्नेचर एक वैकल्पिक सूचना का समूह है जो हर ई-मेल के साथ भेजी जाती है। इसमें नाम, संपर्क सूचना, टाइटल, कम्पनी का एड्रेस या वेबसाइट जोड़ा जा सकता है।

- पेज के दाएँ ओर दिए गये आइकन पर क्लिक करें और फिर सेटिंग्स पर क्लिक करें।
- सिग्नेचर सेक्शन में सिग्नेचर टाइप करके सेव चेंज़ेस पर क्लिक करें।

Social Netorking & e-Commerce (सोशल नेटवर्किंग और ई-कॉमर्स)

सोशल नेटवर्किंग दोस्तों, परिवार, सहकर्मियों, ग्राहकों, या ग्राहकों के साथ जुड़े रहने के लिए इंटरनेट-आधारित सोशल मीडिया साइटों का उपयोग है। सोशल नेटवर्किंग लोगों के बीच में फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन और इंस्टाग्राम जैसी साइटों लोगों के माध्यम से एक सामाजिक उद्देश्य, एक व्यावसायिक उद्देश्य या दोनों हो सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग ग्राहको को व्यस्त रखने के लिए विपणक के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन गया है।

Types of Social Networking (सोशल नेटवर्किंग के प्रकार)

- **Facebook (फेसबुक)**

फेसबुक इंटरनेट का सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला सोशल नेटवर्क है लगभग 1 1 मिलियन लोग इसका उपयोग पुराने दोस्तों के साथ जुड़ने और नए दोस्तों से मिलने के लिए करते हैं। इसका उद्देश्य मिशन लोगों को जोड़ने और उनके बीच संचार को सुविधाजनक बनाने के द्वारा दुनिया को “more open and connected” बनाना है।

लोग व्यक्तिगत प्रोफाइल बनाने के लिए फेसबुक का उपयोग करते हैं, अन्य उपयोगकर्ताओं को “फेसबुक मित्र” के रूप में जोड़ते हैं और असंख्य तरीकों से उनके साथ जानकारी साझा करते हैं। अधिकांश उपयोगकर्ता सभी प्रकार की सामग्री – फोटो, वीडियो, संगीत, चुटकुले और बहुत कुछ साझा करते हैं। वह समान विचार धारा वाले लोगों के साथ संवाद करने के लिए फेसबुक रूचि समूहों में शामिल होते हैं, जिन्हें वह अन्यथा नहीं जानते होंगे। ज्यादातर लोग विशेष फेसबुक एप्लीकेशन का उपयोग करते हैं जो घटनाओं की योजना बनाने, गेम खेलने और अन्य गतिविधियों में संलग्न होने के लिए उपलब्ध हैं।

- **Twitter (ट्विटर)**

प्रत्येक दिन सैकड़ो करोड़ उपयोगकर्ताओं और 500 मिलियन से अधिक ट्वीटर भेजे जाने के साथ व्यवसायों के लिए ट्विटर के माध्यम से नए और मौजूदा ग्राहको के वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने का एक बड़ा अवसर है।

ट्विटर एक सामाजिक संचार उपकरण है जहाँ लोग छोटे संदेश प्रसारित करते हैं। यह संदेश, जिन्हें ट्वीट कहा जाता है, लंबाई में 140 वर्णो तक सीमित हैं। एक ट्विटर उपयोगकर्ता के रूप में, आप उन अन्य लोगों का चयन करतें हैं जिन्हें आप अनुसरण करना चाहते हैं, जब आप किसी का अनुसरण करते हैं, तो उनके ट्वीट आपको ट्विटर स्ट्रीम के रूप में जानी जाने वाली सूची में दिखाई देते हैं। जो कोई भी आपको चुनने के लिए चुनता है, वह आपके ट्वीट को उनकी स्ट्रीम में देखेगा आप समूह बनाने के लिए हैशटैग का उपयोग कर सकते हैं और किसी विशेष कीवर्ड या विषय के आसपास लोकप्रियता उत्पन्न करने में मदद कर सकते हैं। आपद किसी शहर, स्थानीय घटनाओं, समाचार कार्यक्रम, ब्रांड, खेल टीम, या किसी भी चीज के बारे में हैशटैग बना सकते हैं, जिसे आप हैश मार्क (#) से पहले चाहते हैं। प्रत्यक्ष संदेश (डीएम) आपको अन्य ट्विटर उपयोगकर्ताओं के साथ निजी तौर पर संवाद करने देता है।

- **Linkedin (लिंक्डइन)**

चाहे आप किसी बड़ी कंपनी में मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव हों,कोई बिजनेस ओनर जो एक छोटी सी स्थानीय दुकान चलाता हो या यहाँ तक कि काॅलेज में पढ़ने के बाद अपनी पहली नौकरी की तलाश में एक प्रथम वर्ष का काॅलेज स्टूडेंट हो, लिंक्डइन किसी के लिए भी है और हर कोई जो अपनी प्रोफेशनल लाइफ लेने में दिलचस्पी रखता है अपने करियर को विकसित करने और अन्य पेशेवरों के साथ जुड़ने के नए अवसरों की तलाश में अधिक गंभीरता से।

लिंक्डइन पर आपके नेटवर्क को “कनेक्शन,” के रूप में लोगों के साथ जोड़कर आप फेसबुक पर एक मित्र से अनुरोध करेंगे। आप निजी संदेश (या उपलब्ध संपर्क जानकरी) के माध्यम से मना करते हैं और आपके पास अपने सभी पेशेवर अनुभव और उपलब्धियाँ हैं जो अन्य उपयोगकर्ताओं को दिखाने के लिए बड़े करीने से आयोजित प्रोफाइल में रखी गई हैं।

लिंक्डइन अपने लेटर और व्यापक सुविधा की पेशकश के मामले में फेसबुक के समान है। ये विशेषताएँ अधिक विशिष्ट हैं क्योंकि वे पेशेवरों को पूरा करते है। यह लेकिन सामान्य तौर पर, यदि आप जानते हैं कि फेसबुक या किसी अन्य समान सामाजिक नेटवर्क का उपयोग कैसे किया जाता है, तो लिंक्डइन कुछ हद तक तुलनीय है।

- **Instagram (इंस्टाग्राम)**

फेसबुक या ट्विटर की तरह ही इंस्टग्राम अकाउंट बनाने वाले हर व्यक्ति का प्रोफाइल और न्यूज फीड होता हैं।

जब आप इंस्टग्राम पर कोई फोटो या वीडियो पोस्ट करते हैं, तो यह आपके प्रोफाइल पर प्रदर्शित होगा। अन्य उपयोगकर्ता जो आपका अनुसरण करते हैं, वह आपके पोस्ट को अपनी फ़ीड मे देखेंगे। इसी तरह, आप उन अन्य उपयोगकर्ताओं के पोस्ट देखेंगे जिन्हें आप फ़ाॅलो करना चुनते है।

आप इंस्टाग्राम पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ बातचीत करके उनका अनुसरण कर सकते हैं, उनके द्वारा अनुसरण किया जा सकता है, टिप्पणी, पसंद, टैगिंग और निजी संदेश भेज सकते हैं। यहाँ तक कि आप जो तस्वीरें देखते हैं, उन्हें इंस्टाग्राम पर सेव भी कर सकते हैं।

इंस्टाग्राम सभी उद्देश्य साझा करने के बारे में है, इसलिए हर किसी का मुख्य उद्देश्य केवल सर्वश्रेष्ठ फ़ोटो और वीडियो साझा करना और ढूँढना है।

- **Instant Messaging (इंस्टेंट मैसेजिंग)**

एक इंस्टेंट मैसेज (IM) चैट के समान एक वास्तविक समय, टेक्स्ट-आधारित संचार है। IM पर्सनल कंप्यूटर iPhones या अन्य उपकरणों का उपयोग करके दो या दो से आधिक लोगों के बीच एक साझा सॉफ्टवेयर क्लाइंट का उपयोग करता है। संचार एक नेटवर्क अर्थात् इंटरनेट पर किया जाता है और इसमें लाइव आवाज या वीडियो के साथ उन्नत मोड शामिल हो सकते हैं। फ़ाइल स्थानांतरण की भी अनुमति होती है लेकिन सीमित आकार में। जब भी आपकी निजी सूची में कोई व्यक्ति ऑनलाइन होता है, तो यह आपको अलर्ट करता है फिर आप उस विशेष व्यक्ति के साथ एक चैट सत्र शुरू कर सकते हैं।

- **Whatsapp (व्हाट्सएप)**

व्हाट्सएप मैसेंजर एक क्रॉस-प्लेटफॉर्म इंस्टेंट मैसेजिंग एप्लीकेशन है जो आईफोन, ब्लैकबेरी, एंड्रॉइड, विंडोज फोन और नोकिया स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं को मुफ्त में टेक्स्ट, इमेज, वीडियो और ऑडियो संदेशों का आदान-प्रदान करने की अनुमति देता है।

फेसबुक के स्वमित्व वाले एक फ्री, मल्टी-फंक्शन मैसेजिंग और वीओआईपी एप के रूप में, व्हाट्सएप सबसे लोकप्रिय कॉल और चैट एप में से एक है। व्हाट्सएप एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन, मुफ्त इंटरनेट-आधारित अंतर्राष्ट्रीय कॉलिंग, क्रॉस-प्लेटाफॉर्म संगतता, विस्तृत वैश्विक पहुँच और यहाँ तक कि डेस्कटॉप संस्करण जैसी माँग वाली सेवाओं के साथ उपयोग में आसानी से जोड़ती है।

व्हाट्सएप विशेष रूप से अंतिम उपयोगकर्ताओं के साथ लोकप्रिय है जिनके पास असीमित पाठ संदेश नहीं है। बेसिक मैसेजिंग के अलावा, व्हाट्सएप ग्रुप चैट और लोकेशन शेयरिंग विकल्प प्रदान करता है।

तकनीकी रूप से, व्हाट्सएप खुले मानक एक्टेंसिबल मैसेजिंग और प्रेजेंस प्रोटोकॉल (एक्सएमपीपी) के एक अनुकूलित संस्करण का उपयोग करता है। व्हाट्सएप् इंक की स्थापना 2009 में ब्रायन एक्टन और जान कॉउम (याहू के दोनों दिग्गज) ने की थी।

- **Facebook Messenger (फेसबुक मैसेंजर)**

फेसबुक मैसेंजर एक मोबइल टूल है जो उपयोगकर्ताओ को फेसबुक पर दोस्तों को तुरंत चैट संदेश भेजने की अनुमति देता है। उनके मोबाइल फोन पर संदेश प्राप्त होते हैं। फेसबुक मैसेंजर उपयोगकर्ताओं का उन लोगों को चैट संदेश भेजने में सक्षम बनाता है जो अपने फेसबुक अकाउंट पर लॉग इन हैं। यह एंड्रॉइड फोन, आईफोन, आईपैड और ब्लैकबेरी डिवाइस के लिए उपलब्ध है। यह आईओएस, विंडोज (विंडोज 7 और विस्टा) और एँड्रॉइड पर काम करता है।

फेसबुक मैसेंजर के साथ, उपयोगकर्ता अपनी वॉल की पोस्ट देख सकते हैं और अपने फेसबुक दोस्तों से सूचनाओं पर टिप्पणी कर सकते हैं और नए संदेश आने पर सतर्क हो जाते हैं। एस आसान एप के बारे में बहुत अच्छी बात यह है कि इसमें गतिशील समूह वार्तलाप सुविधा है, जो मोबाइल उपकरणों के साथ एकीकृत है। एक स्थान-मानचित्रण उपकरण शामिल है। यूजर्स अपने दोस्तों को फोटो भी भेज सकते हैं। फेसबुक मैसेंजर के जरिए अब रियल-टाइम वीडियो शेयरिंग, वीडियो मैसेंजिंग और वॉयस कॉल संभव है।

- **Telegram (टेलीग्राम)**

टेलीग्राम मैसेंजर एक मैसेंजर एप है जो व्हाट्सएप या फेसबुक मैसेंजर की तरह ही इंटरनेट पर काम करता है। इसका मतलब है कि आप वाई-फाई कनेक्शन या अपने मोबाइल डेटा (आपके पास पर्याप्त डेटा प्रदान करके) का उपयोग करके मुफ्त में संदेश भेज सकते हैं।
टेलीग्राम की मुख्य कार्य क्षमता अधिकांश अन्य मैसेजिंग एप्स की तरह ही होते हे-आप अन्य टेलीग्राम उपयोगकर्ताओं को संदेश दे सकते हैं, फाइलें और स्टिकर भेज सकते हैं।
टेलीग्राम का मुख्य विक्रय बिंदु सुरक्षा है। यह अपनी सभी गतिविधियों का दावा करता है- जिसमें चैट, समूह और मीडिया शामिल हैं – एन्क्रिप्टेड हैं, जिसका अर्थ है कि यदि वे इंटरसेप्टेड हैं, तो भी वह पहले डिक्रिप्ट किए बिना दिखाई नहीं देंगे।
टेलीग्राम का उपयोग स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटाॅप और डेस्कटाॅप कंप्यूटर पर किया जा सकता है। टेलीग्राम एप एंड्राॅइड, आईओएस, विंडोज फोन, विंडो एनटी मैकओएस और लिनक्स के लिए उपलब्ध है।

Introduction to Blogs (ब्लॉग का परिचय)

एक ब्लॉग एक प्रकार की वेबसाइट है जहाँ सामग्री को कालानुक्रमिक (जहाँ, नई सामग्री पहले दिखाई देती है) में प्रस्तुत किया जाता है। ब्लॉग सामग्री को अक्सर प्रविष्टियों या "ब्लॉग पोस्ट" के रूप में जाना जाता है।

ब्लॉग आम तौर पर एक व्यक्ति या एक छोटे समूह द्वारा संवादी शैली में जानकारी प्रस्तुत करने के लिए चलाए जाते हैं। एक ब्लॉग केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिए मौजूद हो सकता है, एक विशेष समूह के साथ जानकारी साझा करने या जनता को संलग्न करने के लिए, ब्लॉग स्वामी अपने ब्लॉग को निजी या सार्वजनिक उपयोग के लिए सेट कर सकता है। जब कोई ब्लॉग सार्वजनिक रूप से सुलभ हो जाता है, तो कोई भी व्यक्ति आमतौर पर ब्लॉग स्वामी की व्यक्तिगत या व्यावसायिक वेबसाइट, उनके सोशल मीडिया प्रोफाइल, ई-मेल और ई-न्यूजलेटर्स और ऑनलाइन कीवर्ड खोज इंजन पर उपलब्ध लिंक के माध्यम से ब्लॉग को खोज सकता है। आजकल बहुत सारे कार्पोरेटट ब्लॉग हैं जो बहुत सारी सूचनात्मक सामग्री का उत्पादन करते हैं। ब्लॉग आमतौर पर (लेकिन हमेश नहीं) एक व्यक्ति द्वारा लिखे गए होते हैं और नियमित रूप से अपडेट किए जाते हैं। ब्लॉग अक्सर (लेकिन हमेशा नहीं) एक विशेष विषय पर लिखे जाते हैं- ऐ ब्लॉग होते हैं, जो वस्तुतः किसी भी विषय पर आप सोच सकते हैं। फोटोग्राफी से लेकर आध्यात्मिकता तक, व्यंजनों से लेकर व्यक्तिगत डायरियों से लेकर शौंक तक-ब्लोगिंग में उतने ही अनुप्रयोग और किस्में हैं जितनी आप कल्पना कर सकते हैं। पूरे ब्लॉग समुदायों ने इन विषयों में से कुछ के आसपास लोगों को एक-दूसरे के संपर्क में रखा है जहाँ वह सीख सकते हैं, विचारों को साझा कर सकते हैं, दोस्त बना सकते हैं और यहाँ तक कि दुनिया भर के समान हितों वाले लोगों के साथ व्यापर भी कर सकते हैं।

अक्सर लोग एक वेबसाइट के साथ ब्लॉग को भ्रमित करते हैं। हालाँकि वेबसाइटें की प्रकृति में स्थिर होती हैं जहाँ सामग्री पृष्ठों में व्यवस्थित होती है, और वे अक्सर अपडेट नहीं की जाती हैं, जबकि एक ब्लॉग गतिशील है, और यह आमतौर पर अधिक बार अद्यतन किया जाता है। कुछ ब्लॉगर एक दिन में कई लेख प्रकाशित करते हैं।

Basics E- Commerce (ई–कॉमर्स की मूल बातें)

ई-कॉमर्स कोई भी व्यावसायिक लेनदेन है जो इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से किया जाता है। ई-कॉमर्स में अमेजन और ईबे जैसे मार्केट प्लेस, फेसबुक और पिंटरेस्ट जैसे सोशल मीडिया और बीच में सब कुछ शामिल है, जहाँ भी आप ऑन लाइन खरीदारी करते हैं।

अपना खुद का वेबस्टोर या वेबसाइट बनाते समय, आपको नीचे चर्चा किए गए क्षेत्रों से शुरू करना चाहिए। वे आपके व्यवस्या के लिए के एक अच्छी नींव बनाने में मदद करेंगे।

- **Choose your product and market (अपना उत्पाद और बाजार चुनें):**

आपको यह जानना होगा कि आप क्या बेचना चाहते हैं और आप किसे बेचना चाहते हैं। कभी-कभी आपके अत्पाद को खरीदने के लिए लोग नहीं होते हैं।

- **Choose your platform (अपना प्लेटफॉर्म चुनें):**

ऑननलाइन बेचने के लिए आपको ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म बनाने की आवश्यकता हो सकती है। यह एक ऐसा सा ॅफ्टवेयर है जिसका उपयोग आप वेबस्टोर बनाने और प्रबंधित करने के लिए करते हैं। मैगेंटो, वूकोमर्स और अधिक जैसे कई ओपन सोर्स प्लेटफ़ार्म हैं जो आपको अपनी जरूरतों के अनुसार स्वयं के वेबस्टोर को बनाने और अनुकूलित करने की अनुमति देते हैं। हालाँकि, आपको अपने वेबस्टोर को सेटअप करने के लिए कोडिंग ज्ञान की आवश्यकता होगी। Shopify Big Commerce, और Squarespace जैसे अन्य प्लेटफॉर्म हैं,जहाँ आपको अपनी वेबसाइट को कस्टम डिजाइन करने की जरूरत नहीं है, इसके बजाय आप पूर्व-निर्मित थीम से चुनते हैं।

- **Design and optimize website (वेबसाइट डिजाइन और आ ॅप्टिमाइज करें):**

एक प्लेटफॉर्म चुनने के बाद अपनी वेबसाइट डिजाइन करें जो ग्राहकों को स्पष्ट रूप से बताए कि आप क्या बेच रहे हैं और इससे उन्हें क्या लाभ होगा। आपके उत्पाद को खरीदने के लिए आपकी वेबसाइट तक पहुँचने से लेकर यात्रा बहुत सरल होनी चाहिए अर्थात् आपकी वेबसाइट को अच्छी तरह से अनुकूलित किया जाना चाहिए। आपकी वेबसाइट पर काम करने वाले कुछ क्षेत्र हैं:

- मोबाइल उपयोगकर्ताओं के लिए उत्तरदायी डिजाइन
- आसान उत्पाद खोज क्षमतायें
- गुणवत्ता उत्पाद साम्रगी
- आसान, तेज चेकआउट प्रक्रिया ग्राहक समीक्षा
- **Choose a payment solution (भुगतान समांधान चुनें):**

ऑननलाइन बेचने के लिए आपको भुगतान एकत्र करने में सक्षम होना चाहिए। पेमेंट गेटवे जोड़ें ताकि आप ऑनलाइन पैसे जमा कर सकें।

- **Decide fulfilment methods (पूर्ति के तरीके तर करें):**

एक ग्राहक द्वारा आपके उत्पाद को खरीदने के बाद आपको या तो सामग्री को पैक करना होगा और उसे अपने पते पर भेजना होगा या आप अपने ऑनलाइन आर्डर को स्टोर करने, लेने पैक करने और जहाज करने के लिए किसी तीसरे पक्ष की रसीद कंपनी को किराए पर ले सकते हैं।

- **Handling returns (रिटर्न को संभालना):**

सभी ऑनलाइन विक्रेताओं को रिटर्न से निपटना होता है। यह ऑनलाइन बिक्री की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। 95% ऑनलाइन ग्राहक एक व्यापारी से फिर से खरीद करेंगे जो एक अच्छा रिटर्न या विनिमय अनुभव प्रदान करता है।

- नई ई-कॉमर्स वेबसाइट शुरू करना आसान काम नहीं है। मूल बातें जानकर, आप एक सफल व्यवसाय के लिए एक ठोस आधार बना सकते हैं।

Types of e-Commerce models (ई-कॉमर्स मा ॅडलों के प्रकार)

- **Business to Business (B2B) (बिजनेस टू बिजनेस)**

यह बिजनेस टू बिजनेस ट्रांजैक्शन है जिसमें कंपनियाँ एक-दूसरे के साथ व्यापार करती हैं। इसमें अंतिम उपभोक्ता शामिल नहीं होता है। इसलिए, ऑनलाइन लेन-देन में केवल निर्माता, थोक व्यापारी, खुदरा विक्रेता आदि शामिल होते हैं।

- **Business to Customer (B2C) (बिजनेस टू कस्टमर)**

यह बिजनेस टू कस्टमर ट्रांजेक्शन है जिसमें कम्पनियाँ अपने सामान और/या सेवाएँ सीधे उपभोक्ता को बेचती हैं। अपभोक्ता अपनी वेबसाइट ब्राउज कर सकते हैं और उत्पादों, चित्रो, समीक्षओं को देख सकते हैं। फिर वे अपना ऑर्डर देते हैं और कंपनी सीधे उन पर माल भेजती हैं। अमाजोन , फ्लिपकार्ट, जबाॅन्ग, आदि बी2सी के लोकप्रिय उदाहरण हैं।

- **Customer to Business (C2B) (कस्टमर टू बिजनेस)**

यह बी2सी माॅडल का उल्टा है। इसलिए उपभोक्ता कंपनी को एक अच्छी या कुछ सेवा प्रदान करता हैं उदाहरण के लिए, एक आईटी फ्रीलांसर जो एक कंपनी में अपने साॅफ्टवेयर को डेमो और बेचता है। यह एक सी2बी लेनदेन होगा।

- **Customer to Customer (C2C) (कस्टमर टू कस्टमर)**

इसमें ग्राहक से ग्राहक का लेनदेन होता है जहाँ उपभोक्ता एक दूसरे के सीधे संपर्क में होते हैं। इसमें किसी भी कंपनी की कोई भागीदारी नहीं होती है। यह लोगों को अपने निजी सामान जैसे कार, बाइक इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स, आदि और संपत्ति को सीधे इच्छुक पार्टी को बेचने में मदद करता है। OLX, Quikr, आदि इस माॅडल का अनुसरण करते हैं।

- **24 * 7 सेवा की उपलब्धता** – ई-कॉमर्स उद्यमों के व्यवसाय को स्वचालित करता है और जिस तरह से वह अपने ग्राहकों को सेवाएँ प्रदान करते हैं, यह कभी भी, कहीं भी उपलब्ध हो जाता है।
- **गैर-नकद भुगतान** – ई-कॉमर्स क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, स्मार्ट कार्ड, बैंक की वेबसाइट के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर और इलेक्ट्रॉनिक भूगतान के अन्य तरीकों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है।
- **विज्ञापन/विपणन** – ई-कॉमर्स व्यवसायों के उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापन की पहुँच बढ़ाता है। उत्पादों/सेवाओं के बेहतर विपणन प्रबंधन में मदद करता है।
- **स्चार सुधार** – ई-कॉमर्स ग्राहकों और भागीदारों के साथ तेज, कुशल, विश्वसनीय संचार के लिए तरीके प्रदान करता है।
- **बेहतर बिक्री** – ई-कॉमर्स का उपयोग करके, किसी भी मानवीय हस्तक्षेप के बिना अत्पादों के लिए ऑर्डर्स किए जा सकते हैं। यह मौजूदा बिक्री संस्करणों को बड़ा बढ़ावा देता है।
- **इन्वेंटरी प्रबंधन** – ई-कॉमर्स इन्वेंट्री प्रबंधन को स्वचालित करता है। आवश्यकता पड़ने पर रिपोर्ट तुरंत तैयार हो जाती है। प्रोडक्ट इन्वेंटरी प्रबंधन बहुत कुशल और बनाए रखने में आसान हो जाता है।
- **समर्थन** – ई-कॉमर्स ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए पूर्व-बिक्री के बाद सहायाता प्रदान करने के लिए विभिन्न तरीके प्रदान करता है।

ई-कॉमर्स उदाहरण:

ई-कॉमर्स लेन -देंन के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है-

- एक व्यक्ति इंटरनेट पर एक किताब खरीदता है।
- एक सरकारी कर्मचारी इंटरनेट पर एक होटल का कमरा बुक करता है।

- एक व्यवसाय एक टोल फ्री नंबर पर का ॅल करता है और विक्रेता के इंटरेक्टिव टेलीफोन सिस्टम का उपयोग करकें कंप्यूटर का आर्डर करता है।
- एक व्यवसाय ऑनलाइन या इलेक्ट्रॉनिक नीलामी के माध्यम से कार्यालय की आपूर्ति खरीदता है।
- एक रिटेलर एक ईडीआई नेटवर्क याएक सप्लायर के एक्स्ट्रानेट का उपयोग करके माल का आदेश देता है।
- एक विनिर्माण संयंत्र कंपनी के इंट्रानेट का उपयोग करके कंपनी के भीतर दूसरे संयंत्र से इलेक्ट्रॉनिक घटकों का आर्डर देता है।
- एक व्यक्ति एक स्वचालित टेलर मशीन (एटीएम) से धन निकालाता है।
- **Netiquettes (नेटिकेट्स)**

हर समाज में शिष्टाचार के कुछ नियम होते हैं जो उस समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए मान्य होते हैं। इसी प्रकार, जब हम ऑनलाइन रहकर संवाद करते हैं तो शिष्टाचार के कुछ नियमों का अनुसरण करना होता है। इन्ही नियमों का पालन जब हम नेट पर करतें है तो यह नेटिकेट्स कहलाते हैं।

जो लोग इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं उन्हें नेटिजन कहतें हैं।

कुछ नेटिकेट्स इस प्रकार हैं:

- असभ्य भाषा का प्रयोग न करें।
- साफ और आसान भाषा का प्रयोग करें।
- स्माइलीज प्रयोग करके अपने भाव व्यक्त करें।
- साइबर दुनिया हमारी दुनिया की तरह है अतः यहाँ भी सोशल एटिकेट्स का पालन करें।
- चोरी, बदमाशी, पीछा करना यह साइबर दूनिया में भी अपराध हैं।
- सभी बड़े अक्षरों का प्रयोग चिल्लाना माना जाता है।
- दूसरे लोगों की निजता का ध्यान रखें।
- सार्वजनिक चैट रूम में, अपनी निजी सूचना साझा न करें और न ही किसी पर निजी टिप्पणी करें।
- ई-मेल करते समय विषय और अटैचमेंट का साफ तौर पर उल्लेख करें। सिर्फ सही प्राप्तकर्ता को ही मेल भेजें।
- अपने संदेश में सही व्याकरण और वर्तनी का प्रयोग करें ताकि आपको आसानी से समझा जा सके ।
- नागरिकों द्वारा उनके ऑफ़लाइन इंटरैक्शन में दी गई जानकारी का सम्मान किया जाना चाहिए।
- वैध कार्रवाई से, उपभोक्ता आसानी से और जल्दी से समझ सकते हैं कि कैसे कंपनी उनकी जानकरी का उपयोग कर रही हे। और उन्हें किसी परेशानी या नुकसान से बचा रही है।
- **E-Governance (ई-गवर्नेंस)**

ई-गवर्नेंस कुछ भी नहीं, लेकिन इंटरनेट प्रौद्योगिको का उपयोग सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक मंच के रूप में, सेवाएँ प्रदान करना और नागरिकों, व्यवसायों और सरकार के अन्य हथियारों के साथ लेन-देन करना है।

ई-गवर्नेंससामग्री शासन को मजबूत करने के लिए एक ठोस रणनीति प्रदान करता है। यह न केवल सरकारी प्रक्रियाओं की जवाबदेही, पारदर्शिता और दक्षता में सुधार कर सकता है बल्कि टिकाऊ और समावेशी विकास को भी आसान बना सकता है। बिना बिचैलियों की मध्यस्थता के, ई-गवर्नेंस दुरस्थ क्षेत्रों में समाज के सीमांत क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओ के प्रत्यक्ष वितरण का एक तंत्र भी प्रदान करता है।

ई-गवर्नेंस राष्ट्रीय, राज्य, नगरपालिका और स्थानीय स्तर, नागरिक और व्यवसायों और सरकारी और सरकारी एजेंसियों के बीच सरकार के अंतर्गत सूचना और लेन-देन के आदान-प्रदान की दक्षता, प्रभावशीलता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बदलने के लिए सूचना के उपयोग और उपयोग के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाना भी इसका मुख्य कार्य है।

Types of e-Governance models (ई-गवर्नेंस मॉडलों के प्रकार)

इन मॉडलो को स्टेकहोल्डर्स, ई-गवर्नेंस सिस्टम डेवलपमेंट साइफल में शामिल किए गए कार्यात्मक चरणों का वर्गीकरण, इंफॉर्मेशन फ्लो और नेशनल ई-गवर्नेंस प्लान्स (NeGP) के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक मॉडल के अपने फायदे और सीमाएँ हैं।

- **Government to Business (G2B) (गवर्मेंट टू बिज़नस)**

G2B मॉडल में सरकार द्वारा अनुमतियाँ, निगरानी, मूल्यांकन, करों का भुगतान, वस्तुओं और सेवाओं की खरीद आदि शामिल हैं। व्यवसायी समुदाय अपनी गतिविधियों को ऑनलाइन करना पसंद करता है जैसे कि अनुमति, रिटर्न, बिक्री, खरीद और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से भर्ती। "विकासशील देश, जहाँ धन की कमी के कारण लागत को कम करने के लिए बहुत दबवा है, सरकारी एजेंसियों द्वारा G2B को प्रोत्साहित किया जा रहा है।"

- **Government to Citizen (G2C) (गवर्मेंट टू सिटिज़न)**

G2C सरकार के साथ नागरिक संपर्क की सुविधा प्रदान करता है, जो ई-गवर्नेंस का प्राथमिक लक्ष्य है। यह लेन-देन करने का प्रयास करता है, जैसे कि सूचना खोजना, भूमि और संपत्ति के रिकॉर्ड, और करों का भुगतान, लाइसेंस का नवीनीकरण, डोमेन लाभ के लिए आवेदान करना, आदि जो कम समय में क्रियान्वित करने में आसान हैं।

- **Government to employees (G2E) (गवर्मेंट टू एम्प्लाईज)**

G2E मॉडल विशेष रूप से सरकारी इकाइयों, या तो राष्ट्रीय, राज्य या स्थानीय सरकार के लिए अंतर-विभागीय तात्कालिक संचार उपकरण है। जी टू ई मॉडल का उद्देश्य सार्वजनिक एजेंसियों के आंतरिक प्रदर्शन की दक्षता को बढ़ाना है।

- **Government to Government (G2G) (गवर्मेंट टू गवर्मेंट)**

G2G में डेटा साझा करना और विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच इलैक्ट्रोनिक आदान-प्रदान का संचालन करना शामिल है। इसका एक लाभ है- लागत बचत, जो लेन-देन की गति बढ़ाने, किसी कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक कर्मियों की संख्या में कमी में कमी और परिणामों की स्थिरता में सुधार करके प्राप्त की जाती है।

Various Applications (विभिन्न अनुप्रयोग)

Railway Reservation (रेलवे रिजर्वेशन)

भारतीय रेलवे एशिया का सबसे बड़ा और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है जिसने आईटी के लाभों को प्राप्त करने के लिए ई-गवर्नेंस को सही तरीके से अपनाया है। भारतीय रेलवे ने आईआरसीटीसी को इस परियोजना के लिए साॅफ्टवेयर और बुनियादी ढाँचे की अवधारण, विकास और कार्यान्वयन का काम सौंपा।

लचीलेपन, मापनीयता, और पूरी तरह से स्वयं-सहायता व्यवस्था के प्रावधान (आरक्षण काउंटर पर सहायक प्रक्रिया से अलग) के मुद्दों पर इंटनेट उपयोगकर्ताओं को अनुमति दी जानी थी। इसके अलावा, लाखों उपयोगकर्ताओं को सुविधा के लिए विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन भुगतान तंत्र (जैसे क्रेडिट कार्ड,इंटरनेट बैंकिंग, कैश कार्ड आदि) को एकीकृत किया जाना था।

आईआरसीटीसी द्वारा 9 महीने से कम समय के रिकाॅर्ड समय के भीतर पूरे इंटरनेट टिकटिंग अवधारणा की कल्पना, निर्माण और कार्यान्वयन किया गया था।

Internet ticketing (इंटरनेट टिकटिंग)

IRCTC का इंटरनेट टिकटिंग ऑपरेशन 3 अगस्त, 2002 को CRIS, रेलवे सूचना प्रणाली केन्द्र के सहयोग से शुरू किया गया था। भारत में रेल यात्रा के लिए टिकट इंटरनेट पर तत्काल टिकट सहित वेबसाइट www.irctc.co.in पर किसी भी उपयोगकर्ता द्वारा साइट पर पंजीकरण करने के बाद (पंजीकरण मुफ्त है) बुक किए जा सकते हैं।

टिकटों के लिए भुगतान मास्टर/वीजा/डिनर क्लब/अमेरिकन एक्सप्रेस क्रेडिट कार्ड, सिटीबैंक डेबिट कार्ड और उपयोगकर्ताओं के बैंक खातों में डायरेक्ट डेबिट के माध्यम से किया जाता है। आई-टिकट 48/72 घंटे के भीतर भारत के 220 से अधिक शहारों में उपयोगकर्ताओं के घरों / कार्यालयों या उनकी पसंद के किसी अन्य पते पर पंहुचा दिया जाता है।

टिकटों की डिलीवरी के अलावा, IRCTC ग्राहकों की सहयाता के लिए 24 . घंटे की हेल्पलाइन जैसे कई मूल्यवर्धन भी करता है, ऑनलाइन उत्तर देने के लिए चौबीसों घंटे ईमेल, ट्रेन की टाइमिंग और अन्य विवरणों के लिए सुविधाएँ, उनके आवास के कन्फर्मेशन की स्थीत के बारे में ग्राहकों को ई-मेल अलर्ट और किसी भी समय उनके टिकटों की डिलीवरी की स्थिति जानने के लिए एक ऑनलाइन कंसाइनमेंट टैकिंब सिस्टम।

टिकट के साथ रद्द करने वाले काॅर्म को जमा करके देश भर के किसी भी कम्प्यूटरीकृत आरक्षण काउंटर पर आई-टिकट को रद्द किया जा सकता है। रद्दीकरण के समय ग्राहक को कोई नकद भुगतान नहीं किया जाता है। उपयोगकर्ता के क्रेडिट कार्ड खाते/बैंक खाते में राशि वापस जमा की जाती है।

e –Ticketing (ई-टिकट)

12 अगस्त, 2005 को, हमने ई-टिकटिंग सेवाएँ शुरू की थीं। उपयोगकर्ता

को उसके साथ भौतिक टिकट होना आवश्यक नहीं है (वह यात्रा के दौरान निर्दिष्ट प्रपत्र में इलेक्ट्रॉनिक आरक्षण पर्ची (ईआरएस) का प्रिंट आउट ले जा सकता है। यात्रा करते समय, उपयोगकर्ता को संबंधित सरकार द्वारा जारी फोटो पहचान पत्र के साथ ईआरएल ले जाना होता है, जो एक साथ यात्रा प्राधिकरण का गठन करता है।

इस सेवा का लाभ उठाने के लिए, उपयोगकर्ता www.irctc.co.in पर लाॅग इन कर सकता है। किसी सामान्य बुकिंग की तरह ही इंटरनेट पर अपने टिकट को बुक करें और प्लान माई टैवल पेज में 'ई-टिकट' का चयन करें। उपयोगकर्ता को टिकट बुक

करते समय यात्रियों में से किसी एक का फोटो पहचान पत्र विवरण देना होगा। अपनी बुकिंग की पुष्टि होने पर, उपयोगकर्ता इलेक्ट्रॉनिक आरक्षण पर्ची (ईआरएस) का प्रिंट ले सकता है और वह ईआरएस और फोटो पहचान पत्र के साथ यात्रा कर सकता है।

चार्ट तैयार करने तक वेबसाइट (www.irctc.co.in) पर ई-टिकट को रद्द करने की अनुमति है। काउंटर्स पर कैंसिल करना संभव नहीं है। आंािक/पूर्ण कैंसलेशन ऑनलाइन संभव है, लेकिन अगर जिस यात्री की आईडी दर्ज की गई है, वह मूल रूप से अकेले अपनी यात्रा कैंसिल करना चाहता है, तो समूह के लिए पूरे टिकट को कैंसिल करना होग और नए सिरे बुकिंग करनी होगी।

यदि कोई व्यक्ति यात्रा के दौरान ईआरएस ले जाने में विफल रहता है तो 50/- बतौर फाइन लगाया जाता है। हालांकि, यदि कोई व्यक्ति फोटो पहचान पत्र ले जाने में विफल रहता है, तो उसे बिना टिकट के माना जाता है। आईआरसीटीसी की ई-टिकटिंग परियाजना के माध्यम से, नागरिकों (शहरी और ग्रामीण) को उनके घर/निवास पर ही रेल टिकट बुक करने और 'रेल आरक्षण केन्द्रों' पर जाने की बाधाओं से बचने के लिए लाभ मिलता है।

Passport (पासपोर्ट)

वर्ष 2010 से पहले, जब भारत के नागरिक पासपोर्ट के लिए आवेदन कर रहे थे, उनमें से कई के पास प्रसंस्करण को पूरा करने के लिए लंबी धीमी गति से चलने वाली कतारों में घंटों खड़े रहने का अनुभव था।

पासपोर्ट कार्यालय में जाने के बाद, आवेदकों को संबंधित काम करने वाले हाथों के सामने और उदासीन व्यवहार को सहन करना पड़ता था।मैनुअल प्रोसेसिंग के कारण, पुलिस सत्यापन में भी बहुत समय लगता था और नागरिक के लिए पासपोर्ट वितरण का अंतिम चरण एक और नागरिक के लिए पासपोर्ट वितरण् क अंतिम चरण एक और दर्दनाक काम था। इस पूरे लंबे समय की की अवधि के दौरान, आवेदक को अपने स्वयं पासपोर्ट के ठिकाने को जानने के लिए एड़ी से चोटी का जोर लगाना पड़ता था। ऐसे भी उदाहरण हैं जब पासपोर्ट आवेदक के पास कई महीनों तक नहीं पहुँचता था। उच्च शिक्षा, चिकित्सा आधार, तीर्थयात्रा या किसी अन्य मानवीय आवश्यकता आदि पासपोर्ट के लिए आवेदन करने के उद्देश्य से सामान्य कारण हुआ करते थे।

Digital Locker (डिजिटल digi locker)

पेपरलेस गवर्नेंस के विचार पर लक्षित, digi locker डिजिटल तरीके से डाक्यूमेंट्स और प्रमाणपत्र जारी करने और सत्यापन के लिए एक प्लेटफार्म है, इस प्रकार भौतिक डॉक्यूमेंट के उपयोग को समाप्त करता है। digi locker खाते के लिए साइन अप करने वाले भारतीय नागरिकों को एक समर्पित क्लाउड स्टोरेज स्पेस मिलता है जो उनके आधार नंबर से जुड़ा होता है। वह संगठन जो डिजिटल digi locker के साथ पंजीकृत हैं, डाक्यूमेंट्स और प्रमाणपत्रों की इलेक्ट्रॉनिक प्रतियाँ (जैसे ड्राइविंग लाइसेंस, वोटर आईडी, स्कूल प्रमाण पत्र) को सीधे नागरिकों के digi locker में स्टोर कर देती हैं।

इस प्लेटफार्म के निम्नलिखित लाभ है-

- नागरिक अपने डिजिटल दस्तावेजों को कभी भी, कहीं भी और ऑनलाइन साझा कर सकतें हैं। यह सुविधाजनक और समय की बचत है।
- यह कागज के उपयोग को कम करके सरकारी विभागों के प्रशासनिक कार्यभार को कम करता है।

- डिजिटल digi locker दस्तावेजों की प्रामाणिकता को मान्य करना आसान बनाता है क्योंकि वे सीधे जारी किए गए जारीकर्ताओं द्वारा जारी किए जाते हैं।
- स्व-अपलोड किए गए दस्तावेजों को डिजिटल रूप से मैपहद सुविधा का उपयोग करके हस्ताक्षरित किया जा सकता है (जो कि स्व-सत्यापन की प्रक्रिया के समान है)।

digi locker प्रणाली में प्रमुख हितधारक निम्नलिखित हैं-

- **जारीकर्ता-** मानक प्रारूप में व्यक्तियों को ई-दस्तावेज जारी करने और उन्हें इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध कराने के लिए एक इकाई होती है। सीबीएसई, रजिस्ट्रार कार्यालय, आयकर विभाग, आदि आमतौर पर वे विभिन्न सरकारी विभाग होते हैं जो आपके विशिष्ट सरकारी विभाग से संबंधित दस्तावेज रखते हैं।
- **अनुरोधकर्ता –** एक रिपाॅजिटरी (जैसे विश्वविद्यालय, पासपोर्ट कार्यालय, क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय, आदि) के भीतर संग्रहीत एक विशेष ई-दस्तावेज के लिए सुरि़ात पहुँच का अनुरोध करने वाला व्यक्ति यानी कोई भी सरकारी या निजी कंपनी आपसे विशिष्ट दस्तावेज तक पहुँच के लिए अनुरोध कर सकती है।
- **निवासी –** एक व्यक्ति जो आधार संख्या के आधार पर डिजिटल digi locker सेवा का उपयोग करता है।
-

Key components of Digi locker (Digi locker के प्रमुख घटक)

प्रत्येक निवासी के **Digi locker** खाते में निम्नलिखित अनुभाग हैं-

- **डैशबोर्ड –** यह अनुभाग वह पहला पृष्ट होता है जिसे आप लाॅगिन करते समय देखते हैं और अपने सभी दस्तावेजों का सारांश दिखाते हैं।
- **जारी किए गए दस्तावेज** – यह अनुभाग आपको सरकार द्वारा जारी किए गए दस्तावेजों या प्राणपत्रों के यूआरएल (लिंक) दिखाता है जैसे –digi locker में भाग लेने वाला विभाग या अन्य एजेंसियाँ।
- **अपलोड किए गए डाक्यूमेंट्स** – यह अनुभाग उन सभी दस्तावेजों को दिखाता है जो आपके द्वारा अपलोड किए गए हैं। आप दस्तावेज़ प्रकार को अपडेट, ई-साइन, और साझा कर सकतें हैं।
- **साझा दस्तावेज़ –** यह अनुभाग उन दस्तावेजों की सूची दिखाता है, जिन्हें आप दूसरों के साथ ई-मेल के माध्यम से साझा करते हैं।
- **गतिविधि –** यह अनुभाग आपके digi locker खाते में आपके द्वारा की गई गतिविधियों का एक लाॅग है। लाॅग में फ़ाइल अपलोड, डाउनलोड, मैपहद आदि गतिविधियों के बारे में विवरण शामिल होता है।
- **इश्यूर्स –** यह अनुभाग उन विभागों और एजेंसियों को सूचीबद्ध करता है जो digi locker पर पंजीकृत हैं। यदि इन विभागों ने आपको कोई दस्तावेज/प्रमाण पत्र जारी किया है, तो यह आपके जारी किए गए दस्तावेज़ अनुभाग में URL (लिंक) के रूप में दिखाई देगा।

IMPORTANT QUESTION

1. ई मेल का पूर्ण रूप बताइए ?

- इलेक्ट्रॉनिक्स मेल
- **इलेक्ट्रॉनिक मेल**
- इलेक्ट्रो मेल
- इलेक्ट्रिकल मेल

2. इ मेल यूजर नाम और डोमिन नाम किस विशेष चिन्ह के द्वारा अलग किया जाता है ?
   - *
   - #
   - **@**
   - +
3. सरकारी संस्था का वेब डोमेन नाम क्या है ?
   - .com
   - **.gov**
   - .edu
   - .org
4. जब कोई सन्देश सफलता पूर्वक प्राप्त कर्ता ना पहुचे तो वह सन्देश कहा पर संग्रहित होता है ?
   - इन्बोक्स
   - सेंट
   - ट्रैश
   - **आउट बोक्स**
5. इनमे से कोन सा सोशल नेटवर्किंग का सही उदाहरण नहीं है ?
   - **जी मेल**
   - फेसबुक
   - ट्वीटर
   - उपरोक्त सभी
6. **2019** की शुरुआत का सबसे लोकप्रिय सोशल नेटवर्क कोन सा है ?
   - इन्स्टाग्राम
   - ट्विटर
   - **फेसबुक**
   - इनमे से कोइकोई नहीं
7. इन्टरनेट का सबसे अधिक उपयोग किये जाने वाला सोशल नेटवर्क कोन सा है ?

- इन्स्टाग्राम
- ट्विटर
- **फेसबुक**
- इनमे से कोई नहीं

8. एक ट्विटर हम अधिक से अधिक कितने वर्णों का प्रयोग कर सकते है ?
   - 200
   - **140**
   - 240
   - 180
9. whatsapp की स्थापना कब हुई ?
   - **2009**
   - 2008
   - 2010
   - 2006
10. whatsapp की स्थापना किसने की ?
    - John milton
    - pascal
    - Charly Babbage
    - **Brian Acton , Jan koum**
11. इनमे से कौन से ई- कोमर्स के सही उदाहरण है ?
    - फेसबुक
    - अमेज़न
    - **दोनों a तथा b**
    - इनमे से कोई नहीं
12. ई – कोमर्स मोडल के कितने प्रकार होते है ?
    - 3
    - **4**
    - 5
    - 2
13. B2C क पूर्ण रूप बताइये ?
    - **Business to customer**

- Business to consultancy
- Business to confectinnery
- इनमे से कोई नहीं

14. ई – गवर्नेस मोडल कितने प्रकार के होते है ?
    - **4**
    - 2
    - 3
    - 5
15. G2E का पूरा नाम बताइये ?
    - **Government to Government**
    - Government to Employee
    - Government to Entire
    - None
16. भारतीय रेलवे नेटवर्क दुनिया में कौन से नंबर में आता है है ?
    - पहला
    - **दूसरा**
    - तीसरा
    - चोथा
17. ई – टिकटिंग सेवा कब शुरू की गई ?
    - 2004
    - 2006
    - 2003
    - **2005**
18. NGP का पूर्ण रूप बताइये ?
    - **राष्ट्रीय ई – गर्वनेस योजना**
    - राष्ट्रीय ई – मेल प्रोजेक्ट
    - राष्ट्रीय ई – गवर्नमेंट प्रोजेक्ट
    - इनमे से कोई नहीं
19. NeGP कब लोंच की गई ?
    - 2004
    - 2005

- **2006**
- 2007

20. MOHFW का पूर्ण रूप बताये ?

- स्वास्थ्य परिवार कल्याण
- मुख्य स्वास्थ्य
- मुख्य परिवार कल्याण सेवायें
- **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय**